EDU TERIA

E - D.N.A

Daily Newspaper Analysis

Prelims Mains Essay

By- Nikhil Ranjan

Useful For Prelims

Date: 22 January 2026

27 साल, तीन मिशन और अंतरिक्ष में 608 दिन गुजारे | संन्यास | सबसे लंबे समय तक अंतरिक्ष में चहलकदमी का रिकार्ड भी

सुनीता विलियम्स 60 साल बेमिसाल, नासा को कहा अलविदा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 21 जनवरी।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर महीनों तक फंसे रहे दो अंतरिक्ष यात्रियों में शामिल नासा की सुनीता विलियम्स सेवानिवृत्त हो गई हैं। नौसेना की पूर्व कप्तान विलियम्स (60) ने नासा में 27 वर्षों से अधिक समय तक सेवाएं दीं और अंतरिक्ष स्टेशन के तीन मिशन में कुल 608 दिन अंतरिक्ष में गुजारे। उन्होंने एक महिला द्वारा सबसे लंबे समय तक अंतरिक्ष में चहलकदमी (स्पेसवाक) का रिकार्ड भी बनाया। उन्होंने कुल 62 घंटे अंतरिक्ष में चहलकदमी की।

अमेरिका की अंतरिक्ष एजंसी नासा ने मंगलवार को बताया कि भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स की सेवानिवृत्ति का आदेश पिछले साल दिसंबर के अंत से प्रभावी हो गया।

बयान में विलियम्स के हवाले से कहा गया कि जो कोई भी मुझे जानता है, उसे पता है कि अंतरिक्ष मेरा सबसे पसंदीदा स्थान है। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष यात्री कार्यालय में सेवाएं देना और अंतरिक्ष में तीन बार उड़ान भरने का अवसर मिलना मेरे लिए अविश्वसनीय सम्मान रहा है। नासा में 27 साल का मेरा करियर अद्भुत रहा और यह मुख्य रूप से मेरे सहकर्मियों से मिले अत्यधिक प्रेम एवं समर्थन की वजह से संभव हो पाया।

बोइंग की कैप्सूल परीक्षण उड़ान के दौरान विलियम्स के साथ अंतरिक्ष में फंसे रहे बुच विलमोर ने पिछले साल गर्मियों में नासा छोड़ दिया था। विलियम्स और विलमोर को 2024 में अंतरिक्ष स्टेशन भेजा गया था और वे बोइंग के नए 'स्टारलाइनर' कैप्सूल से उड़ान भरने वाले पहले अंतरिक्ष यात्री थे। उनका मिशन केवल एक सप्ताह का था लेकिन स्टारलाइनर में आई दिक्कतों के कारण यह नौ महीने से भी लंबा खिंच गया। वे अंततः पिछले साल मार्च में पृथ्वी पर लौटे। नासा के नए प्रशासक जैरेड आइजैकमैन ने विलियम्स को 'अंतरिक्ष उड़ान के क्षेत्र में अग्रणी' बताया। उन्होंने एक बयान में कहा कि आपकी इस शानदार सेवानिवृत्ति पर बधाई। बोइंग का अगला स्टारलाइनर मिशन अंतरिक्ष स्टेशन तक मनुष्यों को नहीं, केवल माल को लेकर जाएगा। नासा यह सुनिश्चित करना चाहता है कि किसी को भी कैप्सूल से अंतरिक्ष में भेजने से पहले इसके थ्रस्टर और अन्य सभी समस्याओं को सुलझा लिए जाएं। यह परीक्षण उड़ान इस वर्ष बाद में होगी।

विलियम्स इस समय भारत दौरे पर हैं। उन्होंने मंगलवार दोपहर को यहां अमेरिकी केंद्र में आयोजित एक संवाद सत्र में हिस्सा लिया था। इस कार्यक्रम स्थल पर 'नजर सितारों पर, पैर जमीन पर' शीर्षक वाले पोस्टर लगाए गए थे जिनमें विलियम्स को 'नासा की सेवानिवृत्त अंतरिक्ष यात्री और अमेरिकी नौसेना की सेवानिवृत्त कप्तान' के रूप में वर्णित किया गया था। उन्होंने संवाद के दौरान उस समय के अपने अनुभवों को भी साझा किया जब वह अंतरिक्ष में फंस गई थीं।

ग्रासा माशेल को 2025 का इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार

सम्मान

नई दिल्ली, एजेंसी। अफ्रीकी राजनेता, समाजसेवी व मानवाधिकार कार्यकर्ता ग्रासा माशेल को 2025 के इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार' के लिए चुना गया।

अंतरराष्ट्रीय जूरी की अध्यक्षता भारत के पूर्व एनएसएशिवशंकर मेनन कर रहे हैं। माशेल का पूरा जीवन मानवाधिकारों की रक्षा और कमजोर वर्गों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए समर्पित रहा है। उनका लक्ष्य हमेशा एक न्यायपूर्ण और समान समाज का निर्माण करना रहा है। ग्रासा को 1997 में संयुक्त राष्ट्र का नैनसेन शरणार्थी पुरस्कार और ब्रिटेन का मानद डेम कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर सम्मान मिला। ग्रासा का जन्म 17 अक्तूबर, 1945 को मोजाम्बिक के एक गांव में हुआ था। बाद में लिस्बन विवि में छात्रवृत्ति प्राप्त की। वही उनके भीतर स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता पैदा हुई।

संयुक्त राष्ट्र का नानसेन शरणार्थी पुरस्कार भी मिल चुका है

अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र क्रांति में बलिदान हुए ठाकुर रोशन सिंह

ठाकुर रोशन सिंह का जन्म 1892 में आज ही वर्तमान उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में हुआ था। कुशल पहलवान और निशानेबाज के रूप में पहचान रखने वाले रोशन सिंह को उनके माता-पिता ने आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया था। उन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लिया और जेल गए। रिहा होने के बाद क्रांतिकारी संगठन एचएसआरए में शामिल होकर सदस्यों को निशानेबाजी सिखाने लगे। 1924 में क्रांतिकारी उद्देश्यों के लिए पीलीभीत के बमरौली गांव में सूदखोर व्यापारी के यहां डाका डाला। इसी घटना को आधार बनाकर अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें 19 दिसंबर, 1927 को फांसी दे दी।

निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर हमले ने रूसी क्रांति को जन्म दिया

1905 में आज ही रूसी सैनिकों ने श्रमिकों के एक शांतिपूर्ण जुलूस पर गोलीबारी की थी। इसमें सैकड़ों लोग मारे गए थे। अधिकारियों का उद्देश्य जुलूस को विंटर पैलेस तक पहुंचने से रोकना था। इस 'खूनी रविवार नरसंहार' ने 1905 की रूसी क्रांति को जन्म दिया।।

Sci & Tech

Hindustan Page
Dainik Bhaskar
Jansatta Page

चांद पर भेजी जाएंगी इंसानी कोशिकाएं

न्यूयॉर्क। नासा अपने आर्टेमिस मिशन के साथ अनोखा प्रयोग करने जा रहा है। इसका नाम अवतार है। इस मिशन के तहत चंद्रमा के पास अंतरिक्ष यात्री जाएंगे। मिशन में अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर की कोशिकाओं से बने ऑर्गन-ऑन-ए-चिप को भी भेजा जाएगा। इस चिप के अंदर जीवित मानव कोशिकाएं हैं। ये कोशिकाएं दिल, लीवर, दिमाग या अन्य अंगों की तरह व्यवहार करती हैं। इसलिए नासा के वैज्ञानिक इसे नकली शरीर कह रहे हैं।

सुरक्षा नासिक में बुधवार को 'तोपची 2026' अभ्यास के दौरान बोफर्स तोप से गोला दागते जवान। इस अभ्यास में उन्नत अग्नि शक्ति और निगरानी तकनीकों का एकीकरण दिखाया गया।

आइएनएस सुदर्शिनी वैश्विक यात्रा पर रवाना

नई दिल्ली, 21 जनवरी (भाषा)।

भारतीय नौसेना का प्रशिक्षण पोत आइएनएस सुदर्शिनी 10 महीने की महासागरीय यात्रा पर रवाना हो गया है और इस दौरान यह पोत 22,000 समुद्री मील की दूरी तय करेगा एवं 13 देशों के 18 बंदरगाहों पर जाएगा। दक्षिणी नौसेना कमान (एसएनसी) के फ्लैग आफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, वाइस एडमिरल समीर सक्सेना ने मंगलवार को कोच्चि के नौसैनिक अड्डे से आइएनएस सुदर्शिनी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जो लंबी दूरी की नौकायन यात्रा 'लोकायन 26' की शुरुआत का प्रतीक है।

सूख रहा जलभंडार, तीन चौथाई आबादी के पास साफ पानी नहीं

रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। एक नई रिपोर्ट में दावा किया गया कि दुनिया जल संकट से आगे बढ़कर वैश्विक जल दिवालियापन के युग में प्रवेश कर चुकी है। यानी इंसान पानी का इस्तेमाल उस रफ्तार से कर रहा है, जितनी तेजी से प्रकृति इसे दोबारा नहीं भर पा रही है। संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय ने करीब 100 से ज्यादा देशों से एकत्र डाटा के आधार पर यह रिपोर्ट जारी की है।

इसमें कहा कि दुनिया में 2 अरब लोग ऐसी जमीन पर रह रहे हैं, जो भूजल स्रोतों के ढहने के कारण धंस रही है। वहीं चार में से तीन चौथाई आबादी उन देशों में है, जहां लोगों के पास साफ पानी नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया कि चेन्नई में शहर डे जीरो (जब शहर का पानी पूरी तरह खत्म हो जाए) हो चुका है।

दुनिया में बढ़ा तनाव : 2010 के मुकाबले पानी को लेकर दुनिया में हिंसक झड़पों में बढ़ोतरी हो चुकी है। रिपोर्ट के मुताबिक, डेढ़ दशक पहले पानी को लेकर दुनिया भर में केवल 20 संघर्ष हुए थे, जो 2024 तक बढ़कर 400 से अधिक हो गए हैं।

दोहन से धंस रही जमीन

1. मैक्सिको सिटी : 21 सेमी प्रति वर्ष की दर से धंस रहा
2. तेहरान और जकार्ता - इन शहरों पर भी डूबने या धंसने का गंभीर खतरा
3. तुर्किये-कोन्या मैदान में भूजल खत्म होने से सात सौ विशाल सिंकहोल बने

पानी के संघर्ष के प्रकार

61% मामले जल बुनियादी ढांचे पर हमले (युद्ध के दौरान)

34% मामले पानी के नियंत्रण पर विवाद

05% में पानी का हथियार के तौर पर इस्तेमाल

पानी को लेकर लड़ाइयों में साल-दर-साल वृद्धि

वर्ष	विवाद मामले
2010	20
2012	57
2014	64
2018	148
2022	235
2023	354
2024	419

स्रोत : पैसिफिक इंस्टीट्यूट और संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय

सूख रही झीलें और नदियां

- 1990 के दशक के बाद से दुनिया की आधी बड़ी झीलें सूख गईं
- सिंधु, पीली नदी और दजला-फरात नदियां समुद्र तक पहुंचने से पहले सूखी
- पिछले 50 वर्षों में यूरोपीय संघ के आकार के बराबर आर्द्रभूमियां नष्ट

इन देशों में ज्यादा हिंसा

जल को लेकर सबसे सबसे ज्यादा तनाव और हिंसा मध्य पूर्व, दक्षिण एशिया (भारत-पाकिस्तान) और उप-सहारा अफ्रीका में रहा।

तापमान में सबसे तेज परिवर्तन का विश्व रिकार्ड दर्ज किया गया

1943 में आज ही इतिहास में तापमान में सबसे तेज परिवर्तन दक्षिण डकोटा के स्पीयरफिश में दर्ज किया गया था। तापमान दो मिनट के भीतर -20 डिग्री सेल्सियस से बढ़कर सात डिग्री सेल्सियस हो गया। यह गर्म व ठंडी हवाओं के मिश्रण से बनने वाले चिनूक हवाओं के कारण हुआ था।

दैनिक जागरण
सप्तरंग
तकनीक की दुनिया का
गुरुवार, 22 जनवरी, 2026

• फोटो फ्रीपिक

23,000 करोड़ रुपये की ठगी की साइबर अपराधियों ने 2024 में, जो गत वर्ष की तुलना में 200 प्रतिशत अधिक रही।

23 लाख से अधिक साइबर क्राइम शिकायतें दर्ज हुईं राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर 2024 में

11 लाख से अधिक सिम और तीन लाख आइएमईआइ नंबर ब्लाक किए गए, जो साइबर ठगी से जुड़े हुए थे।

7130 करोड़ रुपये बचाए गए त्वरित कार्रवाई और फंड फ्रीजिंग के माध्यम से, इंडियन साइबर क्राइम कोआर्डिनेशन सेंटर (आइ4सी) द्वारा।

42% वृद्धि दर्ज हुई साइबर अपराधों में 2023 से 2024 के बीच

इन दिनों

डिजिटल अरेस्ट घातक होता मनोवैज्ञानिक हथियार

इंजीनियर, डाक्टर, व्यापारी, अधिकारी जैसे तमाम शिक्षित और कानून का पालन करने वाले लोग 'डिजिटल अरेस्ट' के जाल में फंसकर आए दिन लाखों-करोड़ों रुपये गंवा रहे हैं। साइबर अपराधी कैसे पढ़े-लिखे लोगों की सोचने-समझने की क्षमता बाधित कर देते हैं, क्या हैं इनसे बचने के उपाय, चर्चा कर रहे हैं **ब्रह्मानंद मिश्र...**

अगर आपको अचानक एक काल आए, धमकी भरे लहजे में कहा जाए कि आप मनी लाड्रिंग या ड्रग तस्करी के दोषी पाए गए हैं। अगले ही कुछ सेकंड में पुलिस या जांच एजेंसी से जुड़े आफिसर होने का दावा करते हुए आपकी सारी निजी जानकारियां आपसे साझा कर दी जाएं। इससे पहले कि आप ठहरकर कुछ सोचें, आपको गिरफ्तारी की धमकी मिलने लगे। ऐसे में अगर आप इंटरनेट की दुनिया के अभ्यस्त नहीं हैं तो थोड़ी देर के लिए सुन्न हो जाएंगे। दरअसल, यह ऐसी 'डार्क क्रिएटिविटी' है, जिसके ट्रैप में फंसकर लोग जीवनभर की कमाई गंवा रहे हैं। बेंगलुरु की महिला इंजीनियर के साथ सीबीआइ आफिसर बनकर 32 करोड़ की ठगी का मामला हो, दिल्ली में बुजुर्ग डाक्टर दंपति के साथ 15 करोड़ रुपये का स्कैम या फिर मुंबई के एक बिजनेसमैन या गुजरात के डाक्टर को डिजिटल अरेस्ट कर करोड़ों रुपये की चपत लगाने की बात हो, यह सिलसिला आए दिन सुर्खियों में रहता है। डिजिटल गिरफ्तारी के लिए भारत में भले ही कोई कानूनी प्रविधान न हो, फिर भी लोग इसके आसान शिकार बन रहे हैं।

क्यों मुश्किल रहा है इससे निजात पाना : हमें समझना होगा कि साइबर अपराध पारंपरिक अपराधों से बिल्कुल अलग होते हैं। पीड़ित और साइबर अपराधी के बीच इतनी अधिक व जटिल डिजिटल और फाइनेंशियल परतें होती हैं, जिन्हें भेद पाना पुलिस और एजेंसियों के लिए आसान नहीं होता। डिजिटल अरेस्ट के शिकार लोगों के खाते से निकला हुआ पैसा 'म्यूल अकाउंट' की एक चेन से जुड़ता है। म्यूल अकाउंट फर्जी दस्तावेजों के आधार पर खोले गए बैंक अकाउंट होते हैं। इसे ऐसे समझें कि अगर साइबर अपराध की घटना दिल्ली में होती है, तो पैसा झारखंड के किसी अकाउंट में भेज दिया जाता है और उस अकाउंट में लगे सभी फर्जी डाक्यूमेंट असम के रहने वाले व्यक्ति के होंगे। जब तक एजेंसियां ट्रांजेक्शन की इन तमाम कड़ियों को जोड़ने की कोशिश करती हैं, तब तक पैसा बाहर निकल चुका होता है। साइबर अपराध का यह नेटवर्क दूसरे देशों से भी संचालित होता है। ऐसे में किसी एक राज्य की पुलिस द्वारा कार्रवाई कर पाना लगभग असंभव होता है। फर्जी सिम, एप्स, फर्जी बैंक अकाउंट से लेकर वीओआइपी (वायस ओवर इंटरनेट प्रोटोकाल) तक, साइबर अपराध का एक मजबूत टेक्निकल इन्फ्रास्ट्रक्चर होता है। हालांकि, सिम और म्यूल अकाउंट के मामले में टेलीकाम कंपनियों और बैंक की जवाबदेही तय की जा सकती है। इससे काफी हद तक लगाम भी लगेगी, पर अंतरराज्यीय और अंतरराष्ट्रीय अपराधियों तक पहुंचने के लिए सीबीआइ ही प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

मनोवैज्ञानिक खेल समझने की जरूरत : पीड़ितों को भावनात्मक रूप से कमजोर बनाने के लिए अपराधी अनेक हथकंडों का इस्तेमाल करते हैं। डिजिटल अरेस्ट में अपराधबोध और सामाजिक शर्म जैसी भावनाएं पैदा कर झांसे में लिया जाता है।

बनाएं तकनीक का कवच

- अगर नंबर की शुरुआत में +91 न हो तो उसे ब्लाक कर दें।
- अगर थर्ड पार्टी से स्कैमर ने आपका पर्सनल डाटा प्राप्त कर भी लिया है, तो भी ओटीपी, पिन आदि साझा न करें।
- यूपीआइ ट्रांजेक्शन की प्रतिदिन की एक लिमिट तय कर देना चाहिए।
- किसी अनजान व्यक्ति के साथ स्क्रीन शेयरिंग न करें।
- घर में बुजुर्गों को जागरूक करें।
- अगर गलती से पैसे ट्रांसफर हो गए हैं तो राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा हेल्पलाइन 1930 पर काल करें और 24 घंटे के भीतर cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

ध्यान देने योग्य बातें

- कोई भी एजेंसी फोन या वीडियोकाल पर पैसे/ओटीपी की मांग नहीं करती है।
- भारत में डिजिटल गिरफ्तारी का कोई कानून नहीं है। किसी भी गिरफ्तारी के लिए मौके पर मौजूदगी जरूरी होती है।
- स्कैमर द्वारा भेजे गए लिंक पर क्लिक करने के बजाय हमेशा आधिकारिक वेबसाइट का रुख करना चाहिए।
- इंटरनेट मीडिया के साथ वित्तीय और कानूनी समझ को भी बढ़ाने की जरूरत है।

डिजिटली अरेस्ट नहीं किया जाता

पुलिस कभी भी डिजिटल तरीके से अरेस्ट नहीं करती और ना ही आपराधिक मुकदमे की आनलाइन सुनवाई होती है। गिरफ्तारी के लिए फिजिकली मौजूद होना जरूरी होता है। सरकार इस तरह से कोई सिक्योरिटी मनी जमा नहीं कराती है। डिजिटल अरेस्ट से बचने के लिए आसान तरीका यही है कि अगर कोई अनजान व्यक्ति आपसे निजी जानकारी या पैसे की मांग करता है तो फोन रख दीजिए। इसकी जानकारी किसी स्वजन को और नजदीकी पुलिस स्टेशन में दीजिए।

शैव्या गोयल
डीसीपी, साइबर सुरक्षा गौतमबुद्ध नगर

हर स्तर पर सतर्कता जरूरी

साइबर अपराधियों का सबसे बड़ा हथियार है आपका डर। डिजिटल अरेस्ट उसी का खतरनाक रूप है। यह केवल साइबर फ्राड ही नहीं है, बल्कि सुनियोजित मनोवैज्ञानिक हमला है। इसमें भ्रम के जरिये व्यक्ति की निर्णय क्षमता को कमजोर कर दिया जाता है। डिजिटल अरेस्ट जैसे साइबर अपराधों से हर वर्ष करोड़ों रुपये का नुकसान हो रहा है, इसलिए डिजिटल कौशल, डाटा साक्षरता और मानसिक सतर्कता समान रूप से जरूरी है।

तुषार धवन
पार्टनर, प्लस91लैब्स

इन तरीकों को आजमाते हैं अपराधी

छद्म रूप : सीबीआइ, ईडी, आरबीआइ या टैक्स आफिसर बनकर धमकाते हैं।

धमकी : पीड़ित पर मनी लांड्रिंग, ड्रग तस्करी या कस्टम उल्लंघन का आरोप लगाते हैं।

फर्जी वारंट : स्कैमर फर्जी गिरफ्तारी वारंट, कोर्ट आर्डर या फेक पोर्टल का लिंक भेजते हैं।

निरंतर निगरानी : उगाही होने तक वे पीड़ित को एकांत में रहने के लिए बाध्य करते हैं और वीडियो काल से निगरानी रखते हैं।

पैसे की मांग : सिक्योरिटी डिपाजिट, जुर्माना या सेटलमेंट फीस के नाम पर पैसे ट्रांसफर करवाते हैं।

टेक टिप्स

फेसबुक अकाउंट का प्राइवेसी चेकअप

भारत में करोड़ों यूजर्स फेसबुक पर सक्रिय हैं, लेकिन इसका दूसरा पहलू यह भी है कि पर्सनल डाटा, अकाउंट एक्सेस, फिशिंग और जाब स्कैम के नाम पर लोग यहां धोखाधड़ी के शिकार भी होते हैं। ऐसे में प्राइवेसी चेकअप के जरिये अकाउंट को आप सुरक्षित बना सकते हैं।

- अपने फेसबुक अकाउंट के मेनू बार में जाकर 'सेटिंग और प्राइवेसी' के आप्शन को चुनें।
- इसके बाद सेटिंग पर क्लिक करके टूल्स एंड रिसोर्सेज पर जाएं।
- इसमें 'लाक' साइन वाला प्राइवेसी चेकअप का आप्शन दिखेगा।
- प्राइवेसी चेकअप के तहत आप यह तय कर सकते हैं कि आपके कंटेंट को कौन देख सकता है, लोग आपको कैसे खोज सकते हैं। इसके अलावा आप डाटा सेटिंग और अकाउंट को सुरक्षित रखने के लिए जरूरी उपाय कर सकते हैं।

इंटरनेट मीडिया

वीडियो कालिंग फीचर

वाट्सएप वेब पर कालिंग की सुविधा को लेकर लंबे समय से चर्चा होती रही है, अब इसके जल्द ही साकार होने की उम्मीद बढ़ गई है। डब्ल्यूएबीटाइन्फो के अनुसार गूगल मीट और जूम जैसी सुविधाओं के साथ जल्द ही वाट्सएप वेब वर्जन के लिए वीडियो कालिंग फीचर पेश कर सकता है। हालांकि, 32 यूजर्स के बजाय 16 यूजर्स के साथ वीडियो कालिंग सपोर्ट करने की वाट्सएप शुरुआत कर सकता है। रिपोर्ट की मानें तो वाट्सएप वेब वर्जन में वीडियो कालिंग के लिए सर्च और थ्री डाट्स मेन्यू के बगल में नया कालिंग बटन जोड़ सकता है। इसमें काल को शेड्यूल करने, मीटिंग के लिए लिंक बनाने जैसी सुविधाएं होंगी।

BIHAR

Dainik Jagaran Page

Hindustan Page

मतदाता जागरूकता में नवाचार के लिए पटना को मिला पुरस्कार

विधानसभा चुनाव के दौरान बेहतर कार्यों के लिए पांच जिलों को मिलेगा सम्मान

उपलब्धि | 1

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। विधानसभा चुनाव-2025 में अलग-अलग कार्यों में बेहतर प्रदर्शन वाले पांच जिलों पूर्वी चंपारण, पूर्णिया, पटना, समस्तीपुर एवं मधुबनी तथा तीन वरिष्ठ पदाधिकारियों का चयन राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए किया गया है। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इन जिलों के जिला निर्वाचन पदाधिकारियों को 25 जनवरी को 16 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के मौके पर नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कृत किया जाएगा।

भारत निर्वाचन आयोग ने हर विधा में देश के सर्वोच्च तीन जिलों का चयन किया है। इनमें बिहार के पांच जिले शामिल हैं।इसको लेकर आयोग के द्वारा सभी संबंधित पदाधिकारियों को पत्र

विनोद सिंह गुंजियाल

कुंदन कृष्णन

मानवजीत सिंह ढिल्लन

25 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर किया जाएगा सम्मानित

- विनोद सिंह गुंजियाल, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी एवं मानवजीत सिंह ढिल्लन ईओयू के डीआईजी भी होंगे सम्मानित

भेजा गया है। चुनाव के दौरान बेहतर तकनीक अपनाने के लिए पूर्वी चंपारण को बिहार चुनाव जिला अवार्ड 2025 दिया जाएगा। इसी प्रकार चुनाव प्रबंधन में बेहतर प्रदर्शन पर पूर्णिया, मतदाता जागरूकता में नवाचार अपनाने के लिए पटना, आदर्श आचार संहिता को प्रभावी ढंग से लागू करने में समस्तीपुर और प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण के लिए मधुबनी को सर्वश्रेष्ठ चुनाव जिला अवार्ड के लिए चयनित किया है। वहीं, विशेष अवार्ड के लिए तीन वरिष्ठ पदाधिकारियों- बिहार के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी बिनोद सिंह गुंजियाल, तत्कालीन एडीजी कुंदन कृष्णन और ईओयू के डीआईजी मानवजीत सिंह ढिल्लन को चुना गया है। इन्हें भी 25 जनवरी को सम्मानित किया जाएगा। इनके साथ ही, सीईओ कार्यालय की सोशल मीडिया टीम एवं अन्य मीडिया संस्थानों को भी सम्मान किया जाएगा। इस संबंध में निर्वाचन विभाग के अपर सचिव माधव कुमार सिंह ने सभी संबंधित जिलों के जिलाधिकारी एवं अन्य अधिकारियों से 24 जनवरी को ही नई दिल्ली स्थित मानेकशां सेंटर में उपस्थित होने का अनुरोध किया है। आयोग ने कहा है कि 24 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे रिहर्सल के लिए उपस्थित होना अनिवार्य है। साथ ही आयोग ने अवार्ड प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों के द्वारा कई सूचनाएं भी मांगी गई है।

उत्तर बिहार बिजली कंपनी सर्वश्रेष्ठ, स्वर्ण पुरस्कार मिला

उपलब्धि | 2

- केंद्रीय विद्युत मंत्री मनोहर लाल ने ऊर्जा सचिव को दिया पुरस्कार
- वित्तीय स्थिति में सुधार के मामले में एनबीपीडीसीएल है अव्वल

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार की बिजली वितरण कंपनी नॉर्थ बिहार पावर डिस्ट्रिब्यूशन कंपनी लिमिटेड (एनबीपीडीसीएल) को देशभर में सर्वश्रेष्ठ स्थान मिला है। ऑल इंडिया डिस्कॉम एसोसिएशन (एआईडीए) ने डिजिटल पेमेंट में उपभोक्ता संतुष्टि में सुधार के लिए एनबीपीडीसीएल को स्वर्ण पुरस्कार से सम्मानित किया है।

बुधवार को नई दिल्ली में आयोजित इलेक्ट्रिसिटी डिस्ट्रिब्यूशन इंडस्ट्री कॉन्फ्रेंस (ईडिकॉन) 2026 के दौरान केंद्रीय विद्युत मंत्री मनोहर लाल ने ऊर्जा सचिव एवं बिहार स्टेट पावर डिस्ट्रिब्यूशन कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक मनोज कुमार सिंह को पुरस्कार प्रदान किया। समारोह में केंद्रीय ऊर्जा मंत्री ने एटीएंडसी नुकसान में उल्लेखनीय कमी और वितरण कंपनियों की वित्तीय स्थिति में सुधार के लिए बिहार के ऊर्जा विभाग के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विद्युत वितरण कंपनियां नागरिकों तक सेवा पहुंचाने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम हैं, इसलिए उपभोक्ता संतुष्टि और डिजिटल सेवाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। कॉन्फ्रेंस में स्मार्ट मीटर और डाटा विश्लेषण का प्रभावी उपयोग सत्र को संबोधित करते हुए ऊर्जा सचिव ने कहा कि स्मार्ट मीटर का उपयोग न केवल राजस्व संग्रहण, बल्कि उससे प्राप्त हो रहे डाटा के विश्लेषण से संचालन क्षमता को मजबूत करने और उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा दी जा सकती है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2023 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के मजबूत राजनीतिक नेतृत्व में बिहार में प्री-पेड स्मार्ट मीटर लगाने की प्रक्रिया शुरू की गई।

भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की 102वीं जयंती समारोह को लेकर जदयू की तैयारी बैठक

सीएम नीतीश प्रदेश कार्यालय के कर्पूरी सभागार में दीप प्रज्वलित कर करेंगे जयंती समारोह का शुभारंभ

नवबिहार दूत संवाददाता

पटना। आगामी 24 जनवरी को जनता दल (यू0) प्रदेश कार्यालय स्थित कपूरी सभागार में भारत रत्न, सामाजिक न्याय के महान पुरोधा जननायक कपूरी ठाकुर की 102वीं जयंती समारोह पूरे धूमधाम के साथ मनाई जाएगी। इस अवसर पर कार्यक्रम का उद्घाटन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया जाएगा।

उक्त जयंती समारोह की ऐतिहासिक सफलता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बुधवार को जनता दल (यू0) प्रदेश कार्यालय में महत्वपूर्ण तैयारी बैठक आयोजित की गई। बैठक में पटना महानगर एवं पटना ग्रामीण संगठन जिलों के पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व सांसद श्री चंदेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी ने आयोजन को भव्य, सफल एवं स्मरणीय बनाने को लेकर पार्टी पदाधिकारियों के साथ विस्तृत विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि भारत रत्न जननायक कपूरी ठाकुर के आदर्शों, सिद्धांतों एवं सामाजिक न्याय की भावना को जन-जन तक पहुँचाना ही इस आयोजन का मूल उद्देश्य है, और यही जननायक कपूरी ठाकुर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उन्होंने सभी कार्यकताओं से आ''ान किया कि जयंती समारोह को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करने हेतु पूर्ण समर्पण और सक्रिय भागीदारी के साथ जुटें। बैठक में प्रमुख रूप से मुख्यालय प्रभारी श्री अनिल कुमार, प्रो. नवीन आर्य चंद्रवंशी, महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष सह प्रदेश प्रवक्ता डॉ0 भारती मेहता, प्रदेश महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी श्री वासुदेव कुशवाहा, प्रदेश प्रवक्ता श्रीमती अंजुम आरा, श्री विनोद कुमार सिंह, पटना ग्रामीण के जिला अध्यक्ष श्री अशोक कुमार सिंह, श्री रमेश ठाकुर, श्री शिवशंकर निषाद, श्री गौरीशंकर शर्मा एवं श्री अवधेश कुमार सहित अनेक नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

तैयारी | सोलर से बिजली का होगा उत्पादन, दिन में सोलर से बिजली उत्पादित कर उसे बैट्री के माध्यम से शाम को पीकआवर में आपूर्ति की जाएगी

बरौनी में एक हजार मेगावाट आवर का बिजली घर बनेगा

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बेगूसराय के बरौनी में नया बिजली घर बनेगा। दिन में सोलर से बिजली उत्पादित कर उसे बैट्री के माध्यम से शाम को पीकआवर में आपूर्ति की जाएगी। बैट्री इनर्जी स्टोरेज सिस्टम (बीईएस) विकसित करने की जिम्मेवारी एनटीपीसी को दी गई है। एनटीपीसी से उत्पादित बिजली को बिहार तय दर पर खरीदेगा। इस बिजली घर से एक हजार मेगावाट आवर बिजली बिहार को मिलेगी। विगत वर्ष 24 जून को पटना में पूर्वी भारत के ऊर्जा मंत्रियों का सम्मेलन हुआ था। उसमें बिहार के ऊर्जा मंत्री बिजेन्द्र यादव ने बिहार सरकार की ओर से राज्य की ऊर्जा व्यवस्था को और सशक्त बनाने के लिए कई अहम प्रस्ताव रखे थे। ऊर्जा मंत्री ने 2000 मेगावाट क्षमता की बैट्री ऊर्जा भंडारण प्रणाली के लिए वायबिलिटी गैप फंडिंग की स्वीकृति का अनुरोध किया था। उनका तर्क था कि बैट्री सिस्टम से बिहार को राहत होगी। घरेलू उपभोक्ताओं की संख्या अधिक होने के कारण शाम में छह-सात बजे से रात के 11 बजे तक बिजली की खपत अधिक होती है। ऐसे में बैट्री सिस्टम में दिन में उत्पादित बिजली को स्टोर किया जा सकेगा और उसे रात में यानी पीक आवर में आपूर्ति की जा सकेगी। इससे बिहार के लोगों को निर्बाध बिजली दी जा सकेगी। उस सम्मेलन में केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने बिहार सरकार के प्रस्ताव पर सैद्धांतिक सहमति दे दी थी। अब ऊर्जा मंत्रालय के निर्देश पर बरौनी के मौजूदा ताप बिजली घर के परिसर में ही बैट्री इनर्जी स्टोरेज सिस्टम पर काम करने का निर्णय लिया गया है। एनटीपीसी ने इसके लिए निविदा जारी कर दी है। बरौनी में एक हजार मेगावाट आवर बिजली उत्पादित होगी। यानी चार घंटे तक प्रति घंटे 250 मेगावाट बिजली बिहार को मिलेगी। बिहार सरकार के अनुरोध पर इस सिस्टम में सोलर को ही शामिल किया गया है। दिन में बिजली उत्पादित होगी और उसे बैट्री में स्टोर कर शाम में आपूर्ति की जा सकेगी। निविदा से एजेंसी का चयन होने के बाद 16 महीने में बिजली घर का निर्माण पूरा हो जाएगा।

16 माह में बिजली घर का निर्माण पूरा होगा, एजेंसी चयन को निविदा जारी

- पिछले साल ऊर्जा मंत्रियों के सम्मेलन में बिजली घर के लिए बनी थी सहमति

02 सौ 50 मेगावाट बिजली हर घंटे मिलेगी बिहार को

कजरा में पहले से चल रही परियोजना

लखीसराय के कजरा में इस तरह की एक परियोजना चालू है। दूसरे चरण के तहत कजरा में दूसरी इकाई बनाई जा रही है जो इस साल चालू हो जाएगा। कंपनी का मानना है कि कुल बिजली आपूर्ति में एक तिहाई से अधिक अक्षय ऊर्जा का होना जरूरी है। ऐसे में बरौनी में बिजली घर बनने से उस कोटा को पूरा करने में सहायता मिलेगी और बिहार को जुर्माना नहीं देना होगा।

किसानों की आय बढ़ाने पर तेजी से हो रहा काम: सीएम

समृद्धि यात्रा

पटना/सारण, हिटी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा है कि राज्य सरकार का मुख्य उद्देश्य किसानों की आमदनी बढ़ाना है। इसके लिए कृषि से जुड़े हर पहलु पर तेजी से काम हो रहा है। सात निश्चय-3 के प्रमुख उद्देश्यों में एक उद्देश्य कृषि में प्रगति प्रदेश की समृद्धि भी शामिल है। मुख्यमंत्री ने समृद्धि यात्रा के क्रम में बुधवार को सारण में निर्माणाधीन बस स्टैंड मैदान से जिले में चल रही विकास कार्यों की समीक्षा की। अधिकारियों के साथ समीक्षात्मक बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए वर्ष 2024 से 2029 के लिए गठित चौथे कृषि रोडमैप को तेजी से लागू किया जा रहा है। मखाना के लिये रोडमैप बनाकर उसके उत्पादन एवं प्रसंस्करण को बढ़ावा दिया जा रहा है। सीएम ने कहा, सभी गावों में दुग्ध उत्पादन समितियों का गठन एवं प्रत्येक पंचायत में सुधा बिक्री केंद्र की स्थापना की जा रही है। साथ ही हर खेत तक पानी पहुंचाया जा रहा है। इससे कृषि का विकास और किसानों की आमदनी भी बढ़ेगी।

देखें P 12

नीतीश ने सारण में विकास कार्यों का जायजा लिया

सारण में बुधवार को योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास करते सीएम नीतीश कुमार। साथ में उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, मंत्री विजय चौधरी और मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत।

05 सौ 38 करोड़ की सौगात दी सारण को

- चौथे कृषि रोडमैप को तेजी से लागू किया जा रहा

विकसित राज्य बनेगा बिहार

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रगति यात्रा से संबंधित जिन योजनाओं की स्वीकृति दी गई है, उनका क्रियान्वयन तेजी से करें। सात निश्चय-2 के तहत जो योजनाएं चलाई जा रही हैं उनका बेहतर ढंग से क्रियान्वयन करें। बिहार को देश के सर्वाधिक विकसित राज्यों की श्रेणी में शामिल करने के लिए सात निश्चय-3 के कार्यक्रमों को लागू किया है। सात निश्चय-3 के तहत जो योजनाएं निर्धारित की गई हैं उस पर बेहतर ढंग से कार्य शुरू करें।

पीएम किसान सम्मान के लिए 29 लाख किसानों का ही निबंधन

विशेष अभियान में सिर्फ एक तिहाई किसानों के आईडी बने

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार में किसानों के निबंधन के लिए चले विशेष अभियान के बावजूद बमुश्किल 29 लाख किसानों का ही निबंधन (फॉर्मर आईडी) हो सका। जनवरी में दो बार में कुल नौ दिनों के विशेष अभियान चलाए गए। फार्मर आईडी नहीं बनाने वाले किसानों को सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल सकेगा।

सूबे में 85 लाख से अधिक किसानों ने पीएम किसान सम्मान योजना के लिए पंजीकरण करा रखा है। यानी, करीब एक तिहाई किसानों की ही आईडी बन पायी। वैसे 65 लाख से अधिक किसानों का ई-केवाईसी हुआ है। चूंकि अब केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का लाभ प्राप्त करने वाले सभी किसानों के लिए फार्मर आईडी को अनिवार्य कर दिया है।

आगामी किस्त का लाभ प्राप्त करने के लिए इन सभी लाभुकों को अनिवार्य रूप से फार्मर रजिस्ट्री कैंप में भाग लेकर फार्मर रजिस्ट्री वेब पोर्टल/ऐप के माध्यम से बायोमेट्रिक अथवा फेस ऑथेंटिकेशन द्वारा सत्यापन कराते हुए भूमि संबंधी दावा दर्ज करना होगा।

राज्य में एग्री स्टैक योजना के तहत किसानों का निबंधन हो रहा है। इसका उद्देश्य कृषि सेवाओं को प्रभावी, पारदर्शी एवं किसानोन्मुख बनाना है। इसके अंतर्गत प्रत्येक किसानों की फार्मर आईडी तैयार की जा रही है, जिसमें भूमि संबंधी विवरण को आधार से जोड़ा जा रहा है, ताकि सरकारी योजनाओं का लाभ बिना किसी बाधा के मिल सके। फार्मर रजिस्ट्री का कार्य प्रारंभ करने से पूर्व पांच जिले सारण, गया, पूर्वी चंपारण, पूर्णिया और भागलपुर के दो-दो राजस्व ग्रामों में पायलट के रूप में यह काम हुआ। इसके बाद सभी 44500 राजस्व गांवों का बकेटिंग कार्य पूर्ण कर अप्रैल से फार्मर निबंधन प्रारंभ किया गया। बाकी गांवों के लिए सरकार से मंजूरी मांगी गई है।

आड़े आईं त्रुटियां ... P 10

जिन किसानों का आईडी नहीं बना वे सरकारी योजनाओं से वंचित होंगे

85 लाख से अधिक किसानों ने पंजीकरण करा रखा है

75 लाख से अधिक ही सक्रिय लाभुक किसान

65 लाख से अधिक किसानों का ई-केवाईसी हुआ है

किसानों के निबंधन से होगा यह लाभ

- पीएम किसान सम्मान निधि योजना का लाभ मिलेगा
- अन्य सरकारी योजनाओं का आसानी से लाभ मिलेगा
- निबंधित किसानों को सस्ता ऋण आसानी से उपलब्ध होगा
- सही समय पर कृषि सब्सिडी, ऋण व बीमा की भी सुविधा
- स्थानीय एवं विशिष्ट कृषि सलाह भी किसानों को मिलेगा

उम्दा प्रदर्शन वाले जिले

वैशाली (66 फीसदी), बेगूसराय (63 फीसदी), शिवहर, बक्सर और शेखपुरा (61 फीसदी), पूर्णिया व कटिहार (53 फीसदी) और लखीसराय (50 फीसदी)

निम्न प्रदर्शन वाले जिले

सारण (12 फीसदी), सीवान (14 फीसदी), जमुई (16 फीसदी), पूर्वी चम्पारण (19 फीसदी), गोपालगंज (23 फीसदी) और पश्चिमी चम्पारण (27 फीसदी)

> बिहार में जमीन से संबंधित मालिकाना हक अभी भी काफी संख्या में पूर्वजों के नाम पर हैं। इसलिए कम निबंधन हुए हैं। लेकिन, किसानों का निबंधन अभी जारी रहेगा। पीएम सम्मान निधि योजना के सभी लाभुकों का हर हाल में निबंधन किया जाएगा। जल्द ही और विशेष अभियान की घोषणा की जाएगी।
>
> –जय सिंह, सचिव, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

अनिबंधित किसानों को होगा यह नुकसान

- किसानों को किसान सम्मान निधि योजना की राशि नहीं मिलेगी
- सरकार की योजनाओं से वंचित हो सकते हैं अनिबंधित किसान
- सस्ते कर्ज की योजना से भी ऐसे किसान वंचित हो सकेंगे
- कृषि सब्सिडी, ऋण व बीमा की भी सुविधा भी किसानों को नहीं
- खेती से जुड़े सलाह भी अनिबंधित किसानों को नहीं मिल सकेगा

सुखद | केंद्रीय जल आयोग ने योजना को हरी झंडी दी, शुरुआत में छह जलाशयों को फायदा होगा

बिहार के जलाशयों में गंगाजल भेजने को मंजूरी

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार के जलाशयों को संकट से बचाने और इसके लिए गंगाजल आपूर्ति की योजना को केन्द्र की हरी झंडी मिल गयी है। केन्द्रीय जल आयोग ने योजना के पीपीआर को मंजूरी दे दी है। पहले चरण में राज्य के 23 जलाशयों में से छह जलाशयों को गंगाजल की आपूर्ति होगी। दो से तीन माह में इस योजना का डीपीआर भी बन जाएगा।

इससे नवादा, लखीसराय, जमुई और मुंगेर जिलों को सूखे से भी निजात मिलेगी। साथ ही सिंचाई के लिए बेहतर विकल्प मिलेगा। जल संसाधन विभाग योजना के कार्यान्वयन में जुट गया है। पहले चरण में बासकुंड, अमृत श्रीखंडी, जालकुंड, मोरवे, आंजन, गरही को गंगाजल मिलेगा। पहले चरण का काम पूरा होने के बाद दूसरे चरण की तैयारी की जाएगी। इस योजना के तहत मानसून अवधि में गंगाजल को पाइप के माध्यम से दक्षिण बिहार के जलाशयों तक पहुंचाया जाएगा। इसके लिए प्रारंभ में 132 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन स्थापित होगी।

132 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन से पानी पहुंचेगा

पहले चरण में यहां काम

बासकुंड	लखीसराय	मोरवे	लखीसराय
अमृत श्रीखंडी	जमुई	आंजन	जमुई
जालकुंड	मुंगेर	गरही	जमुई

02 से तीन माह में योजना का डीपीआर भी तैयार हो जाएगा

पांच बड़े लाभ

1. जलाशयों में सालों भर पानी रहेगा
2. बड़े क्षेत्र में सिंचाई सुविधा मिलेगी
3. गंगाजल की बर्बादी रुकेगी
4. भूजल स्तर में सुधार होगा
5. जलस्रोतों स्थिति बेहतर होगी

> सूबे के जलाशयों को सूखे से बचाने की कार्ययोजना बनायी गई है। मानसून अवधि में गंगा का पानी जलाशयों तक पहुंचाने से इनका संकट दूर होगा।
>
> – विजय चौधरी, जल संसाधन मंत्री

NATIONAL

Hindustan Page
Jansatta Page.

मोदी कैबिनेट ने लिये दो बड़े फैसले, अटल पेंशन योजना का किया विस्तार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में आज दो अहम और दूरगामी फैसले लिए गए जिनका सीधा असर देश के करोड़ों मेहनतकश लोगों और छोटे उद्यमियों पर पड़ेगा। एक ओर असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को बुढ़ापे की सुरक्षा देने वाली अटल पेंशन योजना को वर्ष 2030-31 तक जारी रखने का निर्णय लिया गया है वहीं दूसरी ओर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को सस्ती पूंजी उपलब्ध कराने के लिए स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया को 5000 करोड़ रुपये की इक्विटी सहायता मंजूर की गई है।

कैबिनेट ने अटल पेंशन योजना को आगे बढ़ाते हुए इसके प्रचार प्रसार, क्षमता निर्माण और विकासात्मक गतिविधियों के लिए सरकारी सहयोग जारी रखने का फैसला किया है। इसके साथ ही योजना को टिकाऊ बनाए रखने के लिए गैप फंडिंग की व्यवस्था भी जारी रहेगी। हम आपको बता दें कि वर्ष 2015 में शुरू हुई यह योजना 60 वर्ष की आयु के बाद 1000 से 5000 रुपये मासिक पेंशन की गारंटी देती है। जनवरी 2026 तक इस योजना से 8 करोड़ 66 लाख से अधिक लोग जुड़ चुके हैं। सरकार का मानना है कि निरंतर सहयोग से असंगठित क्षेत्र के और अधिक श्रमिकों तक इसका लाभ पहुंचेगा और देश एक पेंशनयुक्त समाज की ओर मजबूत कदम बढ़ाएगा।

वहीं दूसरे बड़े फैसले के तहत स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया को 5000 करोड़ रुपये की इक्विटी पूंजी तीन चरणों में दी जाएगी। इसका उद्देश्य बैंक की पूंजीगत स्थिति को मजबूत करना और एमएसएमई क्षेत्र को अधिक ऋण उपलब्ध कराना है। इस पूंजी निवेश के बाद वर्ष 2028 तक लगभग 25 लाख 74 हजार नए एमएसएमई लाभार्थी जुड़ने की उम्मीद है। मौजूदा औसत के अनुसार इससे करीब 1 करोड़ 12 लाख नए रोजगार सृजित हो सकते हैं। सरकार के अनुसार मजबूत पूंजी आधार से बैंक सस्ती दरों पर संसाधन जुटा सकेगा और छोटे उद्योगों को प्रतिस्पर्धी लागत पर ऋण मिलेगा।

देखा जाये तो आज के ये दोनों फैसले जनहित और दीर्घकालिक आर्थिक सुरक्षा के सूत्र में बंधे हैं। अटल पेंशन योजना का विस्तार यह स्वीकार करता है कि भारत की असली अर्थव्यवस्था आज भी असंगठित क्षेत्र के कंधों पर टिकी है। रिक्शा चालक, घरेलू कामगार, रेहड़ी पटरी वाले, खेत मजदूर या छोटे कारीगर, इनके लिए बुढ़ापा अक्सर असहायता का दूसरा नाम रहा है। सरकार द्वारा इस योजना को 2030 तक बढ़ाना दरअसल इस वर्ग को यह भरोसा देना है कि काम करने की उम्र बीत जाने के बाद भी जीवन की गरिमा बनी रहेगी।

यह फैसला केवल पेंशन तक सीमित नहीं है। प्रचार और क्षमता निर्माण पर जोर यह संकेत देता है कि सरकार चाहती है कि अंतिम पंक्ति में खड़ा व्यक्ति भी वित्तीय सुरक्षा की भाषा समझे। जब करोड़ों लोग नियमित बचत और पेंशन व्यवस्था से जुड़ते हैं तो यह देश को सामाजिक सुरक्षा के मजबूत ढांचे की ओर ले जाता है। विकसित भारत 2047 का सपना तभी साकार होगा जब विकास का फल सिर्फ वर्तमान पीढ़ी ही नहीं बल्कि भविष्य की वृद्ध पीढ़ी तक भी पहुंचे। उधर, स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया को दी गई इक्विटी सहायता भारतीय अर्थव्यवस्था की धड़कन कहे जाने वाले एमएसएमई क्षेत्र को नई ऊर्जा देने वाला कदम है। छोटे उद्योग केवल उत्पादन के केंद्र नहीं होते बल्कि रोजगार के सबसे बड़े स्रोत भी होते हैं। जब बैंक की पूंजी मजबूत होगी तो वह जोखिम उठाने में सक्षम होगा और छोटे उद्यमियों तक बिना जमानत डिजिटल ऋण पहुंचा सकेगा। इससे स्टार्टअप से लेकर पारंपरिक कुटीर उद्योग तक सभी को फायदा मिलेगा। इस निर्णय का सबसे बड़ा असर रोजगार पर पड़ेगा। अनुमानित एक करोड़ से अधिक नए रोजगार केवल आंकड़ा नहीं हैं बल्कि लाखों परिवारों की आर्थिक स्थिरता का आधार बन सकते हैं। सस्ती और समय पर मिलने वाली पूंजी से छोटे उद्योग न केवल टिकेंगे बल्कि विस्तार भी करेंगे। इससे स्थानीय स्तर पर उत्पादन बढ़ेगा, पलायन घटेगा और ग्रामीण व अर्धशहरी अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। बहरहाल, इन दोनों फैसलों को साथ रखकर देखें तो जो तस्वीर उभर कर आती है वह है एक तरफ बुढ़ापे की सुरक्षा की गारंटी और दूसरी तरफ युवाओं और उद्यमियों के लिए अवसरों का विस्तार। यह नीति वर्तमान और भविष्य दोनों को साधने की कोशिश है।

एमएसएमई को सस्ती पूंजी उपलब्ध कराने का रास्ता भी किया साफ

राखीगढ़ी में आज से होगी खोदाई, नगर स्वरूप का लगाएंगे पता

तैयारी

सातों टीलों पर होगी खोदाई, सबसे पहले टीला एक पर होगा काम शुरू, खोदाई का शुभारंभ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक वाईएस रावत करेंगे

संस, जागरण. नारनौंद (हांसी) : आइकानिक साइट राखीगढ़ी में अलग-अलग समय पर सभी सातों टीलों पर खोदाई होती रही है। इस बार नगर का स्वरूप जानने के लिए खोदाई होगी। सभी टीलों के बाहरी किनारों पर खोदाई करके यह पता लगाया जाएगा कि इनका मुख्य द्वार कहां होता था और एक टीले का दूसरे से क्या संबंध होता था। इन टीलों को अलग-अलग करने वाले अंतर को भी देखा जाएगा। इसके लिए सबसे पहले टीला नंबर एक पर खोदाई का शुभारंभ गुरुवार को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक वाईएस रावत करेंगे।

राखीगढ़ी में अब तक टीलों के बीच ही खोदाई का कार्य किया गया है। इस बार भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने नए ढंग से सोच कर खोदाई करने के लिए रोड मैप तैयार किया है। हजारों साल पहले उनके नीचे का आकार किस प्रकार का होता था। बाढ़ को रोकने के लिए वो लोग किस तकनीक से काम करके पानी रोकते थे। जंगली जानवरों और पशुओं से कैसे गांव या शहर की रक्षा की जाती थी। नगर की संरचना और उसका आकर कैसा था। सीमा के अंदर व बाहर का स्वरूप कैसा था। सीमा पर चहारदीवारी थी या नहीं। इन सभी पहलुओं को खोजने के लिए टीलों के बाहरी क्षेत्र पर खोदाई की जाएगी। इन टीलों पर रहने वाले लोगों का ज्ञान भी एक दूसरे से मेल खाता था। आपस में व्यापार और लेन-देन भी किया जाता था।

राखीगढ़ी के टीले एक पर निरीक्षण करते हुए महानिदेशक वाई एस रावत व मनोज सक्सेना। जागरण

दृष्द्वती के किनारे पर बसा था राखीगढ़ी : राखीगढ़ी सरस्वती नदी की सहायक नदी दृष्द्वती के किनारे पर बसा था। नदी करीब दस हजार वर्ष पहले पूरे वेग से बहती थी। फिर उसमें धीरे-धीरे पानी कम होता गया और अंततः यह सूख गई। इस पर भी काम किया जा रहा है। टीलों के बीच में खोदाई से पता लगाया जाएगा कि इस नदी में जब बाढ़ आती होगी तो पानी इन टीलों के बीच में कहां से निकलता होगा।

दुनिया की महत्वपूर्ण साइट है राखीगढ़ी : रावत : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग दिल्ली के महानिदेशक वाईएस रावत ने बताया कि यह दुनिया की काफी महत्वपूर्ण साइट है। ऐसी साइट पर खोदाई करने का मौका कभी-कभी ही मिलता है। नए ढंग से सोचकर ही खोदाई करने की योजना तैयार की है। इस बार बाहरी क्षेत्र पर खोदाई की जाएगी। उस समय नगर का स्वरूप कैसा होता था, जोकि अब तक देखा नहीं गया को दुनिया के सामने लाया जाएगा।

भारत-पाक सीमा पर बीएसएफ चलाएगा 'आपरेशन सर्द हवा'

जासं, जयपुर

राजस्थान से सटी भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर 22 से 29 जनवरी तक सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) आपरेशन सर्द हवा चलाएगा। आपरेशन सीमा से सटे राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर एवं श्रीगंगानगर जिलों में चलाया जाएगा। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बीएसएफ के जवानों की संख्या बढ़ाने के साथ ही वरिष्ठ अधिकारी पेट्रोलिंग भी करेंगे। जनवरी माह में तेज सर्दी, घने कोहरे और कम दृश्यता का लाभ उठाकर सीमापार से घुसपैठ, मादक पदार्थों की तस्करी एवं अन्य अवैध गतिविधियों की आशंका हमेशा रहती है। ऐसे में बीएसएफ की ओर से प्रतिवर्ष जनवरी माह में गणतंत्र दिवस के आसपास आपरेशन सर्द हवा चलाया जाता है।

जानकारी के अनुसार, 22 से 29 जनवरी तक तारबंदी के निकट जवानों की संख्या बढ़ाई जाएगी। मुख्यालयों एवं कार्यालयों में तैनात जवानों को सीमा पर तैनात किया जाएगा। जैसलमेर एवं बाड़मेर के रेगिस्तान में ऊंटों पर सवार होकर जवान पदचिन्हों की बारीकी से जांच करेंगे। रेतीले टीलों में भी जवानों को तैनात किया जाएगा। सीमावर्ती जिलों में घने कोहरे को देखते हुए नाइट विजन कैमरों एवं थर्मल इमेजर का उपयोग भी बढ़ाया गया है। सीमावर्ती जिलों में बीएसएफ के साथ ही पुलिस भी गश्त तेज करेगी। बीएसएफ के जवानों एवं पुलिसकर्मियों की संयुक्त गश्त भी होगी। ज्ञात हो, पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने आपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान में घुसकर आतंकी अड्डों व सैन्य ठिकानों को तबाह किया था।

बीएसएफ के जवानों की संख्या बढ़ाने के साथ ही वरिष्ठ अधिकारी भी करेंगे पेट्रोलिंग

Dainik Jagaran Page
Jansatta Page

INTERNATIONAL

ग्रीनलैंड के बाद हिंद महासागर में स्थित डिएगो गार्सिया द्वीप पर नजरें गड़ा कर ट्रंप ने सबको चौंकाया

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बयानों की आग अब यूरोप से निकलकर हिंद महासागर तक पहुंच गई है। ग्रीनलैंड को लेकर डेनमार्क और यूरोप को घेरने के बाद ट्रंप ने अब ब्रिटेन और मॉरिशस के बीच हुए डिएगो गार्सिया समझौते पर सीधा हमला बोला है। उन्होंने इस सौदे को नाटो सहयोगी ब्रिटेन की कमजोरी और भारी मूर्खता करार देते हुए कहा कि इससे चीन और रूस जैसे देश उत्साहित होंगे। हम आपको बता दें कि ट्रंप का गुस्सा उस समझौते पर है जिसके तहत ब्रिटेन डिएगो गार्सिया सहित पूरे चागोस द्वीपसमूह की संप्रभुता मॉरीशस को सौंप रहा है। यह संधि पिछले वर्ष हस्ताक्षरित हुई थी और इस समय यह ब्रिटिश संसद में अनुमोदन की प्रक्रिया में है। इसके तहत ब्रिटेन और अमेरिका को डिएगो गार्सिया में मौजूद सैन्य अड्डे के लिए 99 वर्षों की लीज मिलेगी, जिसके बदले मॉरिशस को सालाना भुगतान किया जाएगा।

ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच पर लिखा कि डिएगो गार्सिया एक अत्यंत महत्वपूर्ण अमेरिकी सैन्य अड्डा है और इसे सौंपना अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरनाक संदेश है। उन्होंने इसे ग्रीनलैंड को हासिल करने की अपनी दलील से भी जोड़ा और कहा कि अंतरराष्ट्रीय ताकतें केवल ताकत की भाषा समझती हैं। दिलचस्प बात यह है कि इस पूरे घटनाक्रम में भारत का नाम ट्रंप ने नहीं लिया, जबकि भारत इस सौदे का खुला समर्थक है। नई दिल्ली लंबे समय से मॉरिशस के संप्रभु अधिकारों के पक्ष में रही है और उसने ब्रिटेन को उपनिवेशवाद के इस अध्याय को समाप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया है। भारत ने मॉरिशस को आर्थिक और सुरक्षा सहयोग के तहत भारी पैकेज देने का भी फैसला किया है। इसमें समुद्री संरक्षित क्षेत्र का विकास, उपग्रह स्टेशन की स्थापना और हाइड्रोग्राफिक सर्वे जैसे कदम शामिल हैं। यह सब उस समय हो रहा है जब चीन हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी मौजूदगी लगातार बढ़ा रहा है और मॉरिशस के साथ उसके व्यापारिक रिश्ते भी गहरे हैं।

देखा जाये तो डोनाल्ड ट्रंप का डिएगो गार्सिया पर दिया गया ताजा बयान उनकी विस्तारवादी और शक्ति प्रदर्शन की सोच का स्पष्ट संकेत है। ग्रीनलैंड हो या डिएगो गार्सिया, ट्रंप का तर्क यही है कि अमेरिका को रणनीतिक भूभागों पर सीधा नियंत्रण चाहिए, चाहे इसके लिए अंतरराष्ट्रीय सहमति और इतिहास की अनदेखी ही क्यों न करनी पड़े। हम आपको बता दें कि डिएगो गार्सिया का सामरिक महत्व असाधारण है। हिंद महासागर के मध्य में स्थित यह द्वीप अफ्रीका, पश्चिम एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच एक प्राकृतिक सैन्य चौकी की तरह है। यमन, अफगानिस्तान और पश्चिम एशिया में अमेरिका की कई सैन्य कार्रवाइयों में इस अड्डे की भूमिका निर्णायक रही है। शीत युद्ध के दौर में इसी अड्डे के निर्माण का फैसला भारत के लिए कड़वे अनुभव से जुड़ा है, जब 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान अमेरिकी नौसैनिक टास्क फोर्स को बंगाल की खाड़ी में भेजा गया था। उसी घटना ने अमेरिका को यह अहसास कराया कि हिंद महासागर में स्थायी ठिकाना कितना जरूरी है।

भारत के लिए डिएगो गार्सिया और चागोस द्वीपसमूह का महत्व केवल इतिहास तक सीमित नहीं है। यह क्षेत्र भारत के समुद्री प्रभाव क्षेत्र के केंद्र में आता है। आज जबकि चीन अपने सैन्य और आर्थिक कदमों से हिंद महासागर में दखल बढ़ा रहा है, भारत के लिए यह आवश्यक है कि यहां शक्ति संतुलन बना रहे। मॉरिशस की संप्रभुता को समर्थन देकर भारत एक ओर उपनिवेशवाद विरोधी सिद्धांत पर खड़ा है, तो दूसरी ओर क्षेत्रीय स्थिरता में अपनी भूमिका मजबूत कर रहा है। ट्रंप का बयान इस पूरी प्रक्रिया पर अनिश्चितता का साया डालता है। यदि अमेरिका लीज से संतुष्ट न होकर सीधे स्वामित्व की मांग करने लगे, तो यह अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता की अवधारणा के लिए खतरनाक मिसाल बनेगी। यह वही सोच है जो ग्रीनलैंड के मामले में भी दिखती है, जहां एक संप्रभु देश के भूभाग को केवल सामरिक जरूरत बताकर हासिल करने की बात कही जा रही है। दुनिया के लिए खतरा केवल इतना नहीं है कि एक महाशक्ति आक्रामक बयान दे रही है, बल्कि खतरा यह है कि ताकत के आधार पर सीमाएं और संप्रभुता तय करने की प्रवृत्ति फिर से सिर उठा रही है। यदि यह चलन मजबूत हुआ, तो छोटे और मध्यम देशों की सुरक्षा और स्वतंत्र निर्णय क्षमता पर सीधा खतरा होगा।

अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था, जो नियमों और समझौतों पर टिकी है, धीरे-धीरे जंगल के कानून की ओर बढ़ सकती है। भारत के नजरिये से देखें तो ट्रंप का यह रुख सावधानी की घंटी है। अमेरिका के साथ बढ़ते रक्षा सहयोग के बावजूद भारत को अपने समुद्री हितों और क्षेत्रीय नेतृत्व को लेकर सतर्क रहना होगा। डिएगो गार्सिया पर संतुलित व्यवस्था, जिसमें मॉरिशस की संप्रभुता, भारत की क्षेत्रीय भूमिका और अमेरिका की सुरक्षा जरूरतें साथ चलें, वही हिंद महासागर में स्थिरता की कुंजी है। बहरहाल, ट्रंप का बयान केवल एक द्वीप या एक अड्डे तक सीमित नहीं है। यह उस सोच का प्रतीक है जो दुनिया को सहयोग नहीं, बल्कि अधिग्रहण की नजर से देखती है। ऐसी सोच यदि हावी हुई, तो वैश्विक शांति और संतुलन दोनों के लिए इसके नतीजे गंभीर और दूरगामी होंगे।

अमरजीत मौआर

यूरोपीय संघ के साथ बैठक में आतंकवाद के खिलाफ जीरो टालरेंस पर होगा जोर

लक्ष्य पर फोकस ▶ स्पेन के विदेश मंत्री के समक्ष जयशंकर ने रखा भारत का पक्ष

कहा, साझा चुनौतियों पर सहयोग पहले से कहीं अधिक जरूरी

जागरण ब्यूरो • नई दिल्ली

आगामी 27 जनवरी को होने वाले भारत-यूरोपीय संघ (ईयू) शिखर सम्मेलन में भारत आतंकवाद के मुद्दे को बहुत गंभीरता से उठाने की तैयारी में है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पिछले दो दिनों में यूरोपीय संघ के दो प्रमुख सदस्य देशों पोलैंड व स्पेन के विदेश मंत्रियों के साथ बैठक में भारत की स्थित साफ की है। भारत को इस बात की आशंका है कि विश्व व्यवस्था में हो रहे व्यापक परिवर्तन के दौर में आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक अभियान की रफ्तार धीमी ना हो जाए। ऐसे में भारत इस मुद्दे पर वैश्विक समुदाय का ध्यान आतंकवाद के खिलाफ जीरो टालरेंस की नीति अपनाने की तरफ आकर्षित करा रहा है।

स्पेन के विदेश मंत्री जोसे मैनुएल अल्बारेस के साथ बुधवार को हुई बैठक में जयशंकर ने स्पष्ट कहा कि विश्व व्यवस्था में स्पष्ट रूप से व्यापक परिवर्तन हो रहा है। राष्ट्रों के लिए साझा चुनौतियों पर सहयोग करना पहले से कहीं अधिक अनिवार्य है। यह विशेष रूप से आतंकवाद से लड़ने के संदर्भ में सही है, जहां भारत और स्पेन दोनों पीड़ित रहे हैं। दुनिया को आतंकवाद के प्रति जीरो टालरेंस दिखाना चाहिए।

नई दिल्ली में बुधवार को स्पेन के अपने समकक्ष जोसे मैनुएल अल्बारेस से मुलाकात करते विदेश मंत्री एस जयशंकर। रायटर

इसी तरह की बातें जयशंकर ने दो दिन पहले पोलैंड के विदेश मंत्री से भी कही थीं।

अधिकारियों के मुताबिक भारत-ईयू शिखर सम्मेलन में भारत के लिए आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सहयोग काफी प्रमुख एजेंडा होगा। कोशिश होगी कि भारत और ईयू के बीच आतंकवाद के खिलाफ चल रहा सहयोग और मजबूत हो। वास्तव में, भारत और ईयू के बीच आतंकवाद विरोधी सहयोग की मजबूत नींव है। 2004 में दोनों के बीच रणनीतिक साझेदारी की शुरुआत हुई और इसके एक वर्ष बाद 2005 से एक संयुक्त कार्य समूह काम कर रहा है। इनके बीच नियमित रूप से विमर्श होता है और खतरों को लेकर सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है।

2017 में जारी संयुक्त वक्तव्य में आतंकवाद से लड़ाई पर सहयोग बढ़ाने की सहमति बनी थी। 2024 में भी दोनों देशों के कार्य दल की बैठक में आतंकवाद के क्षेत्रीय और वैश्विक खतरे पर चिंता जताई गई थी। सितंबर, 2025 में ब्रसेल्स में दोनों पक्षों ने घरेलू, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर खतरे का मूल्यांकन किया था।

बता दें कि भारत सीमापार आतंकवाद का दशकों से सामना कर रहा है और विश्व समुदाय के सामने बार-बार यह बात उठाता रहा है कि आतंकवाद से निपटने में एक समान जीरो टालरेंस की नीति होनी चाहिए। इसके लिए अलग-अलग पैमाने नही होने चाहिए व चुनौती का सामना मिलकर करना चाहिए।

अब साख का सवाल बना ग्रीनलैंड, दांव पर आया नाटो

ग्रीनलैंड अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लिए साख का सवाल बन गया है। वह इसके लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार दिख रहे हैं। इस मसले पर अमेरिका और यूरोप एक दूसरे के आमने सामने आ गए हैं। ग्रीनलैंड के मुद्दे पर यूरोप के देशों के विरोध को देखते हुए ट्रंप ने नाटो देशों पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा है कि अमेरिका के बिना नाटो का कोई वजूद नहीं है। एक तरह से ग्रीनलैंड की अपनी जिद पूरी करने के लिए वह नाटो देशों को धमकी दे रहे हैं कि अगर उन्होंने सहयोग नहीं किया तो अमेरिका नाटो से निकल जाएगा और यूरोप की सुरक्षा संकट में पड़ जाएगी। दूसरी तरफ, यूरोप के देशों ने भी ग्रीनलैंड पर अमेरिका के कब्जे के प्रयास के खिलाफ आक्रामक रवैया अपनाया है। नाटो देश ग्रीनलैंड में युद्धाभ्यास करने जा रहे हैं।

नाटो को दांव पर लगा रहा डेनमार्क : डोनाल्ड ट्रंप

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

- अमेरिका को हर हाल में चाहिए ग्रीनलैंड पर मालिकाना हक, डेनमार्क को बताया एहसान-फरामोश
- दावोस में ट्रंप ने साफ किया, ग्रीनलैंड के लिए सैन्य शक्ति का इस्तेमाल नहीं, बातचीत से निकलेगा रास्ता
- अमेरिकी राष्ट्रपति ने डेनमार्क को चेताया, कहा अगर ग्रीनलैंड के लिए न कहा तो याद रखेंगे

दावोस में बुधवार को विश्व आर्थिक मंच की बैठक में बोलते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। एपी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वर्ल्ड इकोनमिक फोरम में साफ कर दिया है कि अमेरिका को किसी भी हालत में ग्रीनलैंड चाहिए। उन्होंने ग्रीनलैंड को बर्फ का सुंदर टुकड़ा बताते हुए कहा कि विश्व की सुरक्षा के लिए अमेरिका को ग्रीनलैंड मिलना चाहिए। ट्रंप ने तर्क दिया कि अमेरिका के अलावा कोई देश या समूह ग्रीनलैंड की सुरक्षा की गांरटी देने में सक्षम नहीं है। एपी के अनुसार ट्रंप ने अमेरिका के पहले के नेतृत्व की चर्चा करते हुए कहा कि हम बेवकूफ थे जो हमने जर्मनी से ग्रीनलैंड की रक्षा करने के बाद उसे डेनमार्क को दे दिया। ट्रंप ने डेनमार्क को एहसान-फरामोश बताया। उन्होंने कहा कि डेनमार्क सिर्फ छह घंटे की लड़ाई में जर्मनी से हार गया था। वह न तो अपनी रक्षा कर पाया और न ही ग्रीनलैंड की। इसलिए अमेरिका मजबूर हुआ और हमने ऐसा किया। ट्रंप ने कहा कि वह ग्रीनलैंड को लीज पर लेने के बजाय उस पर पूरा मालिकाना हक चाहते हैं। हालांकि उन्होंने कहा कि वह ग्रीनलैंड को हासिल करने के लिए सैन्य ताकत का इस्तेमाल नहीं करेंगे। उन्होंने उम्मीद जताई कि बातचीत से कोई रास्ता निकलेगा। ट्रंप ने नाटो देशों को निशाने पर लेते हुए कहा कि हर नाटो सहयोगी की जिम्मेदारी है कि वह अपने इलाके की रक्षा करे। उन्होंने कहा, हम एक बड़ी शक्ति हैं, जितना लोग समझते हैं, उससे ज्यादा। आपने कुछ दिन पहले वेनेजुएला में हमारी ताकत देखी है। इस बीच, ग्रीनलैंड में सेना का इस्तेमाल न करने के ट्रंप के बयान का सकारात्मक असर अमेरिकी शेयर बाजार पर दिखा है और करीब एक प्रतिशत की बढ़त दर्ज की है।

संकट में अमेरिका की मदद को नहीं आएगा नाटो

पत्रकारों से बातचीत में ग्रीनलैंड को लेकर यूरोप के देशों पर अपने हमले को तेज करते हुए ट्रंप ने अमेरिका के लिए नाटो की उपयोगिता पर सवाल उठाया। उन्होंने संकेत दिया कि यूरोप की सुरक्षा के लिए अमेरिका की प्रतिबद्धता एकतरफा नहीं रहेगी। अगर यूरोपीय देश अमेरिका से सुरक्षा की उम्मीद करते हैं तो उनको अमेरिका के रणनीतिक हितों में योगदान देना होगा।

ट्रंप का दावा, अमेरिका की वजह से है नाटो का अस्तित्व पेज>>11

यूरोप ने अमेरिका से व्यापार समझौते पर रोका काम

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

दावोस में डब्ल्यूईएफ को संबोधित करते फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों। एएफपी

- ट्रंप के खिलाफ मुखर हुए यूरोपीय नेता, दिए तीखे बयान
- ईयू के सभी देशों के राष्ट्रीय नेताओं की आज आपात बैठक
- यूरोपीय देशों ने कहा- नाटो के सैनिक ग्रीनलैंड में युद्धाभ्यास करेंगे
- ईयू के नेता क्षेत्रीय अखंडता और राष्ट्रीय संप्रभुता के सिद्धांतों पर एकजुट

सैन्य संगठन नाटो के सदस्य डेनमार्क के स्वायत्त क्षेत्र ग्रीनलैंड को अमेरिका में मिलाने पर आमादा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के विरुद्ध यूरोपीय देश मुखर हो गए हैं। यूरोपीय संसद ने ट्रंप की टैरिफ लगाने की धमकियों के विरोध में अमेरिका और यूरोपीय यूनियन (ईयू) के बीच व्यापार समझौते पर अपना काम निलंबित करने का फैसला किया है। यही नहीं, फ्रांस समेत यूरोपीय देशों ने कहा है कि नाटो के सैनिक ग्रीनलैंड में युद्धाभ्यास करेंगे।

रायटर के अनुसार, ईयू की संसद अमेरिका के साथ पिछले वर्ष जुलाई में हुए व्यापार समझौते के तहत अमेरिकी सामानों पर कई आयात शुल्क हटाने के लिए विधायी प्रस्तावों पर बहस कर रही थी। समझौते पर अमल के लिए इन प्रस्तावों को यूरोपीय संसद और ईयू की सरकारों से मंजूरी की आवश्यकता है। कई सांसदों की शिकायत है कि व्यापार समझौता एकतरफा है, जिसमें ईयू को तो अधिकांश आयात शुल्क कम करने होंगे, लेकिन अमेरिका 15 प्रतिशत की व्यापक दर पर कायम है। पहले वे कुछ शर्तों के साथ इसे स्वीकार करने को तैयार दिख रहे थे। यूरोपीय संसद की व्यापार समिति को 26-27 जनवरी को मतदान के जरिये अपनी स्थिति तय करनी थी, लेकिन अब इसे स्थगित कर दिया गया है।

एपी के अनुसार, यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा ने गुरुवार को ईयू के सभी 27 देशों के राष्ट्रीय नेताओं की आपात बैठक बुलाई है। कोस्टा ने कहा कि ईयू के नेता अंतरराष्ट्रीय कानून, क्षेत्रीय अखंडता और राष्ट्रीय संप्रभुता के सिद्धांतों पर एकजुट हैं।

ग्रीनलैंड की अर्थव्यवस्था मजबूत करने पर हो रहा है काम

यूरोपियन आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वान डेर लेयेन ने फ्रांस के स्ट्रासबर्ग में ईयू सांसदों से कहा कि आयोग ग्रीनलैंड की अर्थव्यवस्था और इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए बड़े यूरोपीय निवेश और सुरक्षा रणनीति पर काम कर रहा है। ब्रिटेन, कनाडा, नार्वे जैसे साझीदार देशों के साथ मिलकर ग्रीनलैंड के आसपास सुरक्षा को बढ़ाया जाना चाहिए।

यूरोप अंतरराष्ट्रीय दबाव का जवाब देने के लिए बाध्य : उर्सुला पेज>>11

हल्के में मत लीजिए

दावोस में सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री वैष्णव ने आइएमएफ की एआइ रैंकिंग को दिखाया आईना, कहा - आइएमएफ की रैंकिंग गलत, पूर्व की कई रैंकिंग दिखा रहीं भारत का सही स्थान

एआइ ताकत के रूप में भारत दुनिया के अगुआ देशों में

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

हल्के में मत लीजिए, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआइ के रूप में भारत दुनिया के अगुआ देशों में है। भारत पूरे एआइ स्टैक में क्षमताएं विकसित कर रहा है और वैश्विक मानक भारत को शीर्ष स्तर में दर्शाते हैं। सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) की एआइ रैंकिंग को आईना दिखाते हुए यह बातें कहीं। उन्होंने आइएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जार्जीवा की उन टिप्पणियों का जोरदार खंडन किया, जिसमें उन्होंने भारत को एआइ मामले में दूसरे ग्रुप में रखा था। वैष्णव ने कहा कि आइएमएफ की रैंकिंग गलत है। पूर्व की कई रैंकिंग भारत का सही स्थान दिखा रही हैं।

दावोस में विश्व आर्थिक मंच के कार्यक्रम में बोलते केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव। वीडियोग्रैब

इंटरनेट मीडिया के अनुसार, दावोस में विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) के कार्यक्रम के दौरान वैष्णव ने आइएमएफ प्रमुख द्वारा उपयोग किए गए मानदंड पर सवाल उठाया और एक स्टैनफोर्ड आकलन का हवाला दिया जिसमें उन्होंने कहा कि भारत को एआइ क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर तीसरे स्थान पर रखा गया है। वैष्णव ने कहा- 'मुझे नहीं पता कि आइएमएफ का मानदंड क्या है, लेकिन आपका यह वर्गीकरण सही कहानी बयां नहीं करता है।' मंत्री ने कहा कि भारत को स्पष्ट रूप से एआइ क्षेत्र में अग्रणी समूह में देखा जाना चाहिए। वैष्णव ने कहा कि एआइ आर्किटेक्चर में पांच लेयर- एप्लीकेशन, माडल, चिप, इन्फ्रास्ट्रक्चर लेयर और एनर्जी लेयर शामिल हैं। भारत अपनी अर्थव्यवस्था के आकार, आबादी और भारतीय आइटी सेवा कंपनियों की वैश्विक उपस्थिति को देखते हुए इन सभी पांच स्तरों पर तेजी से काम कर रहा है। उन्होंने कहा- 'एप्लीकेशन लेयर पर हम शायद दुनिया को सेवाओं के सबसे बड़े सप्लायर होंगे।'

वैष्णव ने यह भी कहा

- भारत अपने मजबूत सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम के कारण धीरे-धीरे दुनिया में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में उभर रहा है।
- भारत 2030 तक सात नैनोमीटर और 2032 तक तीन नैनोमीटर की तकनीक विकसित कर लेगा।
- हमारी चार इकाइयां इसी वर्ष उच्च तकनीक वाले स्वदेशी चिप का उत्पादन शुरू कर देंगी
- भारत में अब लगभग 200,000 स्टार्टअप हैं और यह वैश्विक स्तर पर शीर्ष तीन स्टार्टअप इकोसिस्टम में से एक है। पिछले एक दशक में इसमें मूलभूत बदलाव आया है, जो डीप टेक पर ध्यान केंद्रित करने से संभव हुआ है।
- 24 भारतीय स्टार्टअप चिप्स डिजाइन कर रहे हैं, जो स्टार्टअप के लिए चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में से एक है और 18 को पहले ही वेंचर कैपिटल फंडिंग मिल चुकी है। यह भारत की डीप टेक क्षमताओं में मजबूत विश्वास को दर्शाता है।

भारत अगले पांच वर्षों में छह से आठ प्रतिशत की दर से विकास करता रहेगा पेज>>11

****

भारत-ईयू व्यापार समझौते को इसलिए कहा जा रहा है

भारत और यूरोपीय संघ एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को अंतिम रूप देने के करीब हैं। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वान डेर लेयेन ने इस डील को मदर आफ आल डील बताया है। आइए जानते हैं इस समझौते से भारत को यूरोप के बाजार में किस तरह की बढ़त मिल सकती है।

अमेरिका का विकल्प

यह समझौता वस्त्र, आभूषण, चमड़े के सामान आदि जैसे अमेरिकी टैरिफ से प्रभावित भारतीय श्रम-प्रधान उद्योगों के लिए एक वैकल्पिक बाजार खोलेगा और उन्हें अधिक प्रतिस्पर्धी बनाएगा। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ में भारतीय वस्त्रों पर 10 प्रतिशत टैरिफ लगता है, जबकि बांग्लादेशी वस्त्रों पर कोई शुल्क नहीं लगता है, जिसे यह मुक्त समझौता दूर कर देगा। यह भारतीय आइटी/सेवा निर्यात और कुशल पेशेवरों के आवागमन के लिए भी एक वैकल्पिक बाजार प्रदान करेगा जिससे अमेरिका पर अत्यधिक निर्भरता कम होगी।

ट्रंप की व्यापार नीतियों ने किया मजबूर

इस समझौते में हुई तीव्र प्रगति बदलती वैश्विक भू-राजनीति का परिणाम है। 2013 में विराम लगने के बाद जून, 2022 में वार्ता को फिर शुरू किया गया था। हाल के ट्रंप प्रशासन द्वारा व्यापार नीतियों में किए गए परिवर्तनों के बाद इसमें और अधिक तेजी आई। इन परिवर्तनों ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था को अधिक संरक्षणवादी रुख की ओर मोड़ दिया और पारंपरिक अमेरिकी व्यापार भागीदारों को वैकल्पिक बाजारों की तलाश करने के लिए मजबूर कर दिया। इसमें भारत से सभी आयात पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाना, यूरोपीय संघ से आयात पर 20 प्रतिशत का आधारभूत शुल्क और यूरोपीय संघ से आयातित इस्पात और एल्यूमीनियम पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क लगाना शामिल था। दूसरी ओर, यूरोपीय संघ विनिर्माण क्षेत्र में चीन के प्रभुत्व को लेकर भी चिंतित है।

भारत को मिलेगी 27 देशों तक पहुंच

भारत के लिहाज से देखें तो यूरोपीय संघ विश्व के सबसे विकसित आर्थिक गुटों में से एक है। इसका संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 2026 में 22.52 ट्रिलियन डालर होगा, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था का लगभग छठा हिस्सा है। इस समझौते से भारत को यूरोपीय संघ के 27 देशों में फैले एक बड़े और स्थिर बाजार तक पहुंच प्राप्त होगी, जिससे फार्मास्यूटिकल्स, इंजीनियरिंग सामान, आटोमोटिव कंपोनेंट्स, इलेक्ट्रानिक्स आदि क्षेत्रों में निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। इससे अधिक निवेश, सह-विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा मिलेगा, जिससे भारत को चीन की अधिक उन्नत अर्थव्यवस्था के साथ अंतर को कम करने में मदद मिलेगी।

कम होगी चीन पर निर्भरता

विविध आपूर्ति श्रृंखलाओं और मजबूत आर्थिक लचीलेपन के माध्यम से चीन पर निर्भरता कम होती है। यह नवीकरणीय ऊर्जा घटकों जैसे भारतीय उद्योगों के लिए अधिक अनुकूल बाजार प्रदान करता है, जो चीनी वस्तुओं की कीमतों से प्रभावित होने के कारण उत्पादन बढ़ाने में असमर्थ हैं।

यूरोपीय संघ को मिलेगा बड़ा बाजार

भारत के अलावा यह समझौता यूरोपीय संघ को भी काफी फायदा पहुंचाएगा। भारत और यूरोपीय संघ के बीच पहले से ही मजबूत व्यापारिक संबंध हैं, वित्त वर्ष 2024 में द्विपक्षीय व्यापार का मूल्य 135 अरब डालर था। यह साझेदारी परस्पर पूरक है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। आइएमएफ ने वित्त वर्ष 2024-26 के बीच 7.3 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि का अनुमान लगाया है। इसकी 1.46 अरब की आबादी यूरोपीय संघ को एक विशाल बाजार प्रदान करेगी, जिससे अमेरिका या चीन से जुड़े व्यापारिक झटकों से निपटने में मदद मिलेगी।

जागरण रिसर्च

EDITORIAL

Jansatta Page
Dainik Jagaran Page

ग्रीनलैंड में बर्फ के नीचे ऐसा क्या है, जिसके लिए ट्रंप पागल हो रहे हैं, सीक्रेट शहर का वो 'राज' जिसे दशकों तक दुनिया से छिपाया गया

17 जनवरी 2026 जब यूरोप में लोग सो रहे थे तब डोनाल्ड ट्रंप ने अपनों को भी झटका दे दिया। डोनाल्ड ट्रंप ने एक फरमान जारी किया जिससे वाशिंगटन से ब्रूसेल्स तक हड़कंप मच गया। डॉनल्ड ट्रंप लिखते हैं कि डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, यूके, नीदरलैंड और फिनलैंड। ये सभी देश जो ग्रीनलैंड पहुंचे हैं। पता नहीं किस इरादे से। यह खतरनाक स्थिति है। इसलिए जब तक ग्रीनलैंड की पूर्ण और कुल खरीद के लिए डील नहीं हो जाती तब तक 1 फरवरी से इन पर 10% टेरिफ और 1 जून से 25% टेरिफ लगाता। डोनाल्ड ट्रंप नाटो के देशों पर टेरिफ लगा रहे थे। वैसे ही जैसे भारत पर लगाया था जब भारत ने उनकी बात नहीं मानी थी। ट्रंप का यह जो ऐलान था यह अचानक नहीं था। इसके पीछे ईगो फैक्टर था क्योंकि इन आठ देशों ने डॉनल्ड ट्रंप के ईगो को डेंट कर दिया था। वो ठोकर मारी थी जो अंदर चुभ रही थी

आठ जंग रुकवाने का दावा करने वाले डोनाल्ड ट्रंप ने इस साल की शुरूआत से क्या-क्या किया? वेनेजुएला में सेना उतार कर राष्ट्रपति को उठवा लिया। ईरान पर हमले की धमकी दे दी। तमाम देशों पर नए टेरिफ लगाने की भी धमकी दे डाली। और अब ईरान में हालात सामान्य होने की बात कह के ग्रीनलैंड की तरफ रुख कर लिया। सेल्फ एक्लेम्ड पीस प्रेसिडेंट ने कहा कि ग्रीनलैंड पर अमेरिका के कंट्रोल से कम कुछ भी स्वीकार नहीं है। रूस के राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन ये कहते हैं कि यूक्रेन पर हमारा नियंत्रण हमारी सुरक्षा के लिए जरूरी है। क्योंकि नाटो हमारी दहलीज पर आया तो अमेरिका और पूरा पश्चिम चिल्लाता है कि यह तानाशाही है। रूस ने तो आक्रमण कर दिया। लोकतंत्र की हत्या हो रही है। लेकिन जब वही अमेरिका वही डोनल्ड ट्रंप ये कहते हैं कि ग्रीनलैंड पर हमारा कब्जा हमारी सुरक्षा के लिए जरूरी है। क्योंकि ऐसा हो सकता है कि चीन और रशिया वहां आ जाए। तो अमेरिका उसे स्ट्रेटजी बता रहा है, डील बता रहा है। दरअसल, ग्रीनलैंड की कहानी जो है वो सिर्फ जमीन के टुकड़े की नहीं है। वो दुनिया के बदलते नियमों की है।

वाशिंगटन से लेकर ब्रूसेल्स तक ट्रंप ने मचाया हड़कंप: 17 जनवरी 2026 जब यूरोप में लोग सो रहे थे तब डोनाल्ड ट्रंप ने अपनों को भी झटका दे दिया। डोनाल्ड ट्रंप ने एक फरमान जारी किया जिससे वाशिंगटन से लेकर ब्रूसेल्स तक हड़कंप मच गया। डॉनल्ड ट्रंप लिखते हैं कि डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, यूके, नीदरलैंड और फिनलैंड। ये सभी देश जो ग्रीनलैंड पहुंचे हैं। पता नहीं किस इरादे से। यह खतरनाक स्थिति है। इसलिए जब तक ग्रीनलैंड की पूर्ण और कुल खरीद के लिए डील नहीं हो जाती तब तक 1 फरवरी से इन पर 10% टेरिफ और 1 जून से 25% टेरिफ लगाता। डोनाल्ड ट्रंप नाटो के देशों पर टेरिफ लगा रहे थे। वैसे ही जैसे भारत पर लगाया था जब भारत ने उनकी बात नहीं मानी थी। ट्रंप का यह जो ऐलान था यह अचानक नहीं था। इसके पीछे ईगो फैक्टर था क्योंकि इन आठ देशों ने डॉनल्ड ट्रंप के ईगो को डेंट कर दिया था। वो ठोकर मारी थी जो अंदर चुभ रही थी। असल में अमेरिका ने जब ग्रीनलैंड को खरीदने या कब्जाने की शुरूआती धमकियां दी तो यही वो आठ यूरोपीय देश थे जिन्होंने डेनमार्क के साथ कहा कि हम खड़े रहेंगे। मजबूती से रहेंगे। ग्रीनलैंड में सेना भेजा तो ट्रंप ने निकाला टैरिफ वाला हथियार: यह मजबूती दिखाने के लिए नाटो के उसूलों का सम्मान करते हुए इन आठ देशों ने अपने सैनिक जो हैं वो ग्रीनलैंड भेज दिए। इनडायरेक्टली ये अमेरिका को एक बड़ा संदेश था कि ग्रीनलैंड अकेला नहीं है। हाथ मत लगाना। लेकिन

ट्रंप जो अपने ईगो के लिए जाने जाते हैं ना खाता ना वही जो हम सोच रहे हैं बस वही सही। उन्होंने इसे अपनी शान के खिलाफ मान लिया। 1 फरवरी से इन सभी आठ देशों के सामानों पर 10% एक्स्ट्रा टेरिफ लगा दिया गया। धमकी दी गई कि अगर 1 जून तक ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिका के मन मुताबिक समझौता नहीं हुआ। यानी ग्रीनलैंड अमेरिका को नहीं सौंपा गया तो यह टेरिफ बढ़कर 25% कर दिया जाएगा। यह 25% किसी दुश्मन देश पर नहीं लगाया गया। यह उन दोस्तों पर लगाया गया है जो पिछले 75 सालों से हर युद्ध में अमेरिका के कंधे से कंधा मिलाकर लड़ रहे थे। कितना जरूरी है ग्रीनलैंड: ग्रीनलैंड का महत्व उसकी लोकेशन में निहित है। ग्रीनलैंड जो है वो आर्कटिक रीजन के आठ देशों में से एक है। ऐसे तो यह डेनमार्क का हिस्सा है लेकिन ऑटोनॉमस टेरिटरी है यानी स्वायत्त क्षेत्र। इसका 80% हिस्सा बर्फ से ढका है और बर्फ की भी 4 किमी मोटी परत है। लेकिन अब यह पिघल रही है। आर्कटिक रीजन बाकी दुनिया के मुकाबले चार गुना रफ्तार से तप रहा है। करीब 26 लाख स्क्वायर किमी बर्फ गायब हो चुकी है। डाटा के मुताबिक इसी बर्फ के नीचे दुनिया की 30% अनएक्सप्लोर्ड गैस और 13% अनएक्स्लोर्ड ऑयल यह छुपे हुए हैं। इसके अलावा यहां कीमती धातुएं सोना, प्लैटिनम, जस्ता और लौ, अयस्क, तांबा, सीसा, मोलिब्डेनम और टाइटेनियम यह सब भी मौजूद बताए जाते हैं। इन सब वजहों से इस आइलैंड पर ट्रंप ही नहीं रूस और चीन की भी नजर बनी रहती है। शीत युद्ध के दौरान, ग्रीनलैंड-आइसलैंड-यूके गैप नाटो की समुद्री रणनीति का केंद्रीय तत्व था, जो अटलांटिक में प्रवेश करने वाली सोवियत पनडुब्बियों की निगरानी को संभव बनाता था। दशकों तक आर्कटिक एक जमे हुए बफर की तरह रहा- दूरस्थ, दुर्गम और लंबे समय तक चलने वाली प्रतिस्पर्धा से लगभग अप्रभावित। लेकिन अब जलवायु परिवर्तन आर्कटिक को एक सक्रिय क्षेत्र में बदल रहा है। पिघलती बर्फ नए समुद्री मार्ग खोल रही है। साथ ही, हाइपरसोनिक हथियारों, लंबी दूरी के सटीक प्रहार, अंतरिक्ष-आधारित सेंसर, मिसाइल रक्षा और समुद्रगत प्रणालियों में प्रगति दूरी को लगातार समेट रही है। ऐसे में ग्रीनलैंड हाशिये से खिसककर अग्रिम रणनीतिक क्षेत्र में बदल जाता है। जो दूरी कभी सुरक्षा देती थी, वह सिमट रही है; प्रतिक्रिया का समय घट रहा है; और अमेरिकी मुख्यभूमि के लिए चेतावनी का अंतराल सिकुड़ता जा रहा है। बर्फ के नीचे छिपा अरबों खरबों डॉलर का खजाना: आज की दुनिया तेल पर नहीं चिप्स और बैट्रियों पर चलती है। आपका iPhone हो, टेस्ला कार हो या फिर F35 फाइटर जेट सबको चलने के लिए यह मिनरल्स चाहिए। फिलहाल इन पर चीन का राज है। अमेरिका जानता है कि भविष्य का तेल यही मिनरल है और यह खेल सिर्फ सरकार का नहीं बड़े-बड़े अरबपति जैसे बिल गेट्स, पीटर थील भी ग्रीनलैंड के खनिजों में पानी की तरह ऐसा बहा रहे हैं। कोबोल्ड मेटल्स जैसी कंपनियां वहां खुदाई की तैयारियां कर रही हैं। उन्हें पता है कि भविष्य का सोना यहीं छिपा है। बर्फ पिघलने से नए समुद्री रास्ते खुल रहे हैं। जिसे पोलर सिल्क रोड कहा जा रहा है। जो जहाज एशिया से यूरोप जाने के लिए स्विज नहर का लंबा रास्ता लेते थे। वो भविष्य में ग्रीनलैंड के ऊपर से गुजरेंगे। यह रास्ता दूरी को 40% तक कम कर देगा। ग्रीनलैंड वो चेक पोस्ट है जो आने वाले 100 सालों तक वैश्विक व्यापार को नियंत्रित करेगा। भारत के उदाहरण से समझें। सियाचिन ग्लेशियर का कोई विशेष आर्थिक मूल्य नहीं है, उस पर भारी लॉजिस्टिक लागत भी आती है और वह अनुभवी सैनिकों के लिए भी अत्यंत दुर्गम है। इसके बावजूद भारत दशकों से सियाचिन पर कायम है। क्योंकि उसे खाली करने का अर्थ होगा पाकिस्तान को ऐसे भू-भाग पर कब्जा करने देना, जो भले ही आज सीमांत लगे, लेकिन भविष्य में उपयोग में लाया जा सकता है। एक बार ऐसा इलाका हाथ से निकल जाए तो उसे वापस हासिल करना कई गुना महंगा पड़ता है। इसलिए सियाचिन पर बने रहने का फैसला तात्कालिक सामरिक लाभ से नहीं, बल्कि दीर्घकालिक दूरदृष्टि से उपजा है। अमेरिका के लिए ग्रीनलैंड भी कुछ ऐसा ही है। अमेरिका के सीक्रेट शहर की कहानी क्या है: क्या आप जानते हैं कि ग्रीनलैंड की बर्फ के नीचे अमेरिका का एक सीक्रेट शहर आज भी दबा हुआ है। बात है 1960 के दशक की। शीत युद्ध अपने चरम पर था। उस वक्त कोल्ड वॉर में अमेरिका ने ग्रीनलैंड में एक बेहद खुफिया मिशन चलाया था जिसका नाम था प्रोजेक्ट आइस वर्म। प्लान बेहद खतरनाक था। अमेरिका ग्रीनलैंड की बर्फ की चादर के नीचे हजारों किलोमीटर लंबी सुरंगे खोदकर एक पूरा शहर कैम सेंचुरी बसाना चाहता था। वहां 600 परमाणु मिसाइलें तैनात करने की योजना थी जो लगातार चलती रहती और सोवियत संघ के निशाने पर होती। अमेरिका ने वहां पर सिनेमा हॉल, चर्च और रहने की भी जगह बनाई थी। सब कुछ बर्फ के नीचे लेकिन कुदरत से कोई नहीं जीत पाया। ग्लेशियर की बर्फ खिसकने लगी और वो पूरा शहर दब गया। प्रोजेक्ट को छोड़ना पड़ा। अब ग्लोबल वार्मिंग से जब बर्फ पिघल रही है तो जहर के बाहर आने का खतरा भी मंडरा रहा है। यही नहीं साल 1968 में अमेरिका का एक ई52 बम वर्षक विमान जिसमें चार हाइड्रोजन बम थे। ग्रीनलैंड में क्रैश हो गया। उस हादसे को ब्रोकन एरो कहा जाता है। ट्रंप कहते हैं ग्रीनलैंड सुरक्षित नहीं है। लेकिन सच तो यह है। ग्रीनलैंड को सबसे ज्यादा खतरा खुद अमेरिका के प्रयोगों से हो रहा है। अब आगे क्या: अमेरिका की नीति नैटो देशों के साथ परंपरागत संबंध बनाए रखने की रही है। लेकिन वहां एक बड़े वर्ग की सोच थी कि यूरोपीय देशों में अनेक अमेरिकी नीतियों के साथ नहीं चलते, उसका विरोध करते हैं जबकि अमेरिकी सैन्य शक्ति से ही उनकी धाक है। उनका सवाल यह भी था कि जब सोवियत संघ खत्म होने के साथ उसके सैन्य ढांचे समाप्त हो गए तो नाटो की आवश्यकता ही क्या है? ट्रंप नाटो को खत्म नहीं कर रहे, पर उनकी अगुआई में अमेरिका अपने हिसाब से इसका संचालन सुनिश्चित करने की ओर अग्रसर है। बहरहाल, इसमें दो राय नहीं कि अमेरिका में राष्ट्रपति ट्रंप के इस रुख और व्यवहार का विरोध करने वाले भी बड़ी संख्या में है। बावजूद इसके, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उन्हें अमेरिका के प्रभुत्व और प्रभाव का पूरे विश्व को अहसास कराने और उसे आर्थिक व सामरिक रूप से पहले से ज्यादा सुरक्षित बनाने और दुनिया में अमेरिका केंद्रित विश्व व्यवस्था का रास्ता तैयार करने वाला नेता माना जाएगा।

अमरजीत मौआर

भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती

'प्रति व्यक्ति आय को ऊंचे स्तर तक ले जाना'

दावोस, 21 जनवरी (भाषा)।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को कहा कि भारत आने वाले कुछ वर्ष में निश्चित रूप से दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। वहीं, अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ ने कहा कि यह 2028 या उससे भी पहले संभव है।

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की वार्षिक बैठक के एक सत्र में यहां वैष्णव ने कहा कि चिंता का एकमात्र विषय अमीर देशों में कर्ज का पहाड़ और उनका भारत पर संभावित असर क्या होगा है।

गोपीनाथ ने कहा कि भारत के लिए चुनौती तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना नहीं है बल्कि प्रति व्यक्ति आय को ऊंचे स्तर तक ले जाना है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को कहा कि महंगाई में नरमी और मजबूत आर्थिक वृद्धि के बल पर भारतीय अर्थव्यवस्था अगले पांच वर्षों में वास्तविक रूप से छह-आठ फीसद और मौजूदा कीमतों पर 10-13 फीसद की दर से बढ़ती रहेगी। वैष्णव ने यहां संबोधित करते हुए अनुमति प्रक्रियाओं के सरलीकरण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि दूरसंचार टावर स्थापित करने में लगने वाला औसत समय 270 दिनों से घटकर सात दिन रह गया है और 89 फीसद अनुमतियां अब तुरंत मिल रही हैं।

वैष्णव ने कहा कि पिछले एक दशक में देश में परिवर्तनकारी बदलाव हुआ है जो सुविचारित, स्पष्ट रूप से परिभाषित और बेहतर क्रियान्वयन पर आधारित है। उन्होंने बताया कि यह चार स्तंभों भौतिक, डिजिटल एवं सामाजिक अवसंरचना में सार्वजनिक निवेश, समावेशी विकास, विनिर्माण एवं नवाचार और प्रक्रियाओं के सरलीकरण पर टिका है। वैष्णव ने कहा कि इन सभी को प्रौद्योगिकी मंच के साथ जोड़कर हमने ऐसा ढांचा तैयार किया है जिससे अगले पांच वर्ष में भारत छह से आठ फीसद की वास्तविक वृद्धि, दो से चार फीसद की महंगाई और 10-13 फीसद की बाजार मूल्य आधारित वृद्धि हासिल करेगा।

भारतीय नेताओं का मजबूत आर्थिक वृद्धि, पर्यावरण अनुकूल उपायों पर जोर

नई दिल्ली, 21 जनवरी (ब्यूरो)।

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की वार्षिक बैठक में जहां वैश्विक नेता सुस्त आर्थिक वृद्धि और बढ़ते जलवायु जोखिमों पर चिंता जता रहे हैं, वहीं भारतीय प्रतिनिधिमंडल देश की मजबूत वृद्धि दर और पर्यावरण अनुकूल उपायों को प्रमुखता से पेश कर रहा है। एक परिचर्चा में केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी ने कहा कि भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

उन्होंने सतत विकास और ग्रिड स्थिरता के लिए निवेश बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य हासिल करने के लिए बड़े निवेश की जरूरत है। जोशी ने बताया कि भारत ने डिजिटलीकरण और स्मार्ट मीटरिंग के जरिए अपने ग्रिड का आधुनिकीकरण शुरू कर दिया है, जिसने व्यवस्था को मजबूत किया है और नागरिकों को सशक्त बनाया है। उन्होंने कहा कि भारत जैसे ही जल्द चौथी से तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ेगा, अब मुख्य आवश्यकता ग्रिड की स्थिरता सुनिश्चित करने की है। 'ग्रिड स्थिरता' का मतलब बिजली के नेटवर्क (ग्रिड) में उत्पादन (आपूर्ति) और खपत के बीच निरंतर संतुलन बनाए रखना है। मंत्री ने कहा कि भारत निवेश पर शानदार रिटर्न प्रदान करता है, जिसे एक स्थिर नियामक व्यवस्था और सुसंगत नीतियों का समर्थन प्राप्त है। उन्होंने कहा कि इन्हीं नीतियों ने भारत को एक 'नाजुक अर्थव्यवस्था' से बदलकर वैश्विक वृद्धि के नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करने में मदद की है। जोशी ने कहा कि कम गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए), नियंत्रित मुद्रास्फीति, बढ़ते उत्पादन और तेजी से सुधरते बुनियादी ढांचे के साथ भारत निवेश के लिए आकर्षक अवसर पेश कर रहा है। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि देश के 42 फीसद खनिज संसाधन झारखंड में हैं, जो देश के विकास के लिए अनिवार्य हैं। उन्होंने संसाधनों की रक्षा के साथ-साथ राज्य में समृद्धि लाने पर जोर दिया। गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने कहा, 'गुजरात बड़े पैमाने पर पर्यावरण अनुकूल उपायों का उदाहरण पेश करता है। इसने अपनी औद्योगिक क्षमता को संतुलित विकास और संसाधन दक्षता के माडल में बदल दिया है।' उन्होंने कहा कि गुजरात लंबे समय से भारत का विकास इंजन रहा है, जो राष्ट्रीय जीडीपी, निर्यात और विनिर्माण क्षेत्र में अपना बड़ा योगदान दे रहा है। आंध्र प्रदेश के मंत्री नारा लोकेश ने कहा कि भविष्य के लिए स्थिरता के हमारे चार प्रमुख स्तंभ हैं पारिस्थितिकी तंत्र को प्राथमिकता, व्यापार करने की गति, तीसरा, पर्यावरण अनुकूल रोजगार और कौशल में निवेश और नीतिगत निश्चितता एवं दक्षता।

मैक्रों ने ट्रंप की धमकी के जवाब में ईयू से व्यापार में बदलाव को लेकर विचार का आग्रह किया

ब्रसेल्स, 21 जनवरी (एपी)।

ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की धमकियों से चिंतित यूरोपीय संघ, अमेरिका के खिलाफ जवाबी कार्रवाई पर विचार कर सकता है। यूरोपीय संघ (ईयू) अमेरिकी सामान पर भारी शुल्क से लेकर फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के सुझाए गए तरीकों को अपना सकता है। मैक्रों ईयू 'एंटी-कोर्सियन इंस्ट्रूमेंट (एसीआइ) को लागू करने का सुझाव दे रहे हैं। इसके तहत उन व्यक्तियों या संस्थानों पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है जो यूरोपीय संघ पर अनुचित दबाव डालते पाए जाते हैं।

इन प्रतिबंधों से यूरोपीय संघ के बाजारों तक अमेरिकी कंपनियों की पहुंच सीमित हो सकती है, उन्हें यूरोपीय संघ के सार्वजनिक निविदाओं में भाग लेने से भी रोका जा सकता है। इसके साथ ही वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात और आयात में कमी आ सकती है, जिससे अमेरिकी कंपनियों को अरबों डॉलर का नुकसान हो सकता है। एसीआइ की स्थापना यूरोपीय आयोग द्वारा 2021 में तब की गई थी जब चीन ने ताइवान के साथ लिथुआनिया के संबंधों को लेकर उससे व्यापार प्रतिबंधित कर दिया था। चीन ताइवान को अपना क्षेत्र मानता है। मैक्रों ने मंगलवार को दावोस में आगाह किया कि अमेरिका द्वारा लगाए गए अतिरिक्त शुल्क यूरोपीय संघ को पहली बार अपने दबाव-रोधी तंत्र का इस्तेमाल करने के लिए मजबूर कर सकते हैं।

विदेशी संस्थागत निवेशकों की लगातार पूंजी निकासी का असर

रुपया 67 पैसे टूटकर 91.64 के रिकार्ड निचले स्तर पर

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 21 जनवरी।

अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपया बुधवार को 67 पैसे लुढ़ककर अब तक के सबसे निचले स्तर 91.64 (अस्थायी) पर बंद हुआ। वैश्विक बाजारों में बढ़ती अनिश्चितता और जोखिम लेने की धारणा कमजोर होने के बीच विदेशी संस्थागत निवेशकों की लगातार पूंजी निकासी के दबाव में रुपए में गिरावट आई। बाजार सूत्रों ने कहा कि रुपया 16 दिसंबर, 2025 को 91.14 के अपने पिछले सबसे निचले स्तर पर पहुंचा था। इस महीने अब तक रुपये में 1.50 फीसद की गिरावट आई है।

उन्होंने कहा कि इस गिरावट का कारण बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता हो सकती है। उन्होंने कहा कि ग्रीनलैंड मुद्दे और संभावित शुल्क को लेकर यूरोप में बढ़ते तनाव, साथ ही घरेलू बाजार में नकारात्मक रुख ने निवेशकों की कारोबारी धारणा को और प्रभावित किया। अंतरबैंक विदेशीमुद्रा विनिमय बाजार में, रुपया 91.05 पर खुला और डालर के मुकाबले 91.74 के कारोबार के निचले स्तर पर आ गया। कारोबार के अंत में रुपया 91.64 (अस्थायी) के सर्वकालिक निम्न स्तर पर बंद हुआ, जो पिछले बंद स्तर से 67 पैसे कम था। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के शोध विश्लेषक, दिलीप परमार के मुताबिक, 21 नवंबर, 2025 के बाद यह एक दिन में सबसे बड़ी गिरावट है। मंगलवार को, रुपया सात पैसे टूटकर 90.97 पर बंद हुआ था।

कोटक महिंद्रा एएमसी के प्रमुख (फिक्स्ड इनकम), अभिषेक बिसेन ने कहा कि भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाएं अस्थिर पूंजी के प्रवाह के दबाव का सामना कर रही हैं। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, भू-राजनीतिक तनाव वैश्विक कारोबार पर असर डाल रहे हैं। वैश्विक तनाव में ग्रीनलैंड विवाद और वेनेजुएला के तेल भंडार पर अमेरिका का नियंत्रण शामिल है।

ग्रीनलैंड विवाद ने अमेरिका-यूरोप संबंधों को खराब किया है और इससे नाटो के टूटने का खतरा है। बिसेन ने कहा कि भारत के लिए, अमेरिका के साथ लंबित व्यापार समझौता एक अहम संतुलनकारी पहलू बना हुआ है, क्योंकि इसके होने से विश्वास और द्विपक्षीय व्यापार बढ़ सकता है। उन्होंने कहा कि साथ ही, जब तक भू-राजनीतिक जोखिम कम नहीं हो जाता और व्यापार समझौता नहीं हो जाता, तब तक रुपया बाहरी झटकों के प्रति कमजोर बना रह सकता है। हालांकि, मजबूत विदेशीमुद्रा भंडार को देखते हुए, भारतीय रिजर्व बैंक स्थिति को संभाल सकता है।

निवेशकों के पांच लाख करोड़ का नुकसान

भारतीय शेयर बाजार में बुधवार को भारी बिकवाली देखने को मिली। बाजार खुलने के कुछ ही देर बाद निवेशकों की कमाई पर बड़ी चोट पड़ी और सिर्फ पहले कुछ घंटों के अंदर ही मार्केट से करीब 5 लाख करोड़ रुपए की दौलत साफ हो गई। बीएसई सेंसेक्स और निफ्टी 50 लगातार तीसरे दिन गिरावट के साथ कारोबार करते दिखे। इन तीन दिनों में निवेशकों के 15 लाख करोड़ का नुकसान हुआ। ग्लोबल टेंशन, कमजोर घरेलू नतीजे, गिरता रुपया और विदेशी निवेशकों की बिकवाली ने मिलकर बाजार को बुरी तरह दबाव में डाल दिया।

वहीं, दूसरी ओर वैश्विक स्तर पर तनाव बढ़ने, कमजोर संकेतों और विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी के बीच बुधवार को घरेलू शेयर बाजार लगातार तीसरे दिन गिरावट के साथ बंद हुए। उतार-चढ़ाव भरे सत्र में सूचकांक 271 अंक टूट गया जबकि निफ्टी में 75 अंक की गिरावट रही। कारोबारियों के मुताबिक, डालर के मुकाबले रुपए में कमजोरी और वित्तीय, बैंकिंग एवं उपभोग से जुड़े शेयरों में बिकवाली ने भी बाजार पर दबाव बनाए रखा। हालांकि, निचले स्तर पर चुनिंदा शेयरों में खरीदारी आने से थोड़ा समर्थन मिला। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक भारी उतार-चढ़ाव के बाद 270.84 अंक यानी 0.33 फीसद गिरकर 81,909.63 अंक पर बंद हुआ।

सोना, चांदी के भाव नए शिखर पर

राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में बुधवार को सोना और चांदी नए शिखर पर पहुंच गए। सोने की कीमत करीब 1.60 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम जबकि चांदी 3.34 लाख रुपए प्रति किलोग्राम पर रही। अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार, 99.9 फीसद शुद्धता वाला सोना 6,500 रुपए यानी 4.24 फीसद बढ़कर 1,59,700 रुपए प्रति 10 ग्राम (सभी टैक्स मिलाकर) हो गया। मंगलवार को, सोने ने पहली बार देश की राजधानी में 1.5 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम के महत्वपूर्ण स्तर को पार किया। स्थानीय सर्राफा बाजार में चांदी की कीमत में भी लगातार नौवें दिन तेजी जारी रही। चांदी की कीमत 11,300 रुपए बढ़कर 3,34,300 रुपए प्रति किलोग्राम (सभी टैक्स मिलाकर) हो गई। पिछले कारोबारी सत्र में चांदी 20,400 रुपए बढ़कर 3,23,000 रुपए प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक (कमोडिटीज), सौमिल गांधी ने कहा कि सोने और चांदी ने बुधवार को नए रिकार्ड ऊंचाई को छुआ। लगातार सुरक्षित निवेश की मांग बनी रही।

शिक्षा में नवाचार की चुनौतियां

दावा किया जाता है कि वैश्विक स्तर पर विज्ञान और नवाचार के मामले में भारत तेजी से उभर रहा है। शोध कार्यों में भी देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है। मगर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार की राह अब भी कई तरह की चुनौतियों से घिरी है।

सुरेश सेठ

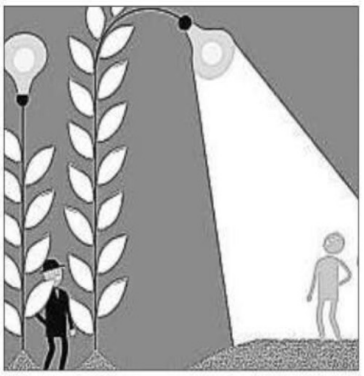

भारत में बदलाव और विकास को रफ्तार देने के लिए नवाचार एक अहम पहलू है। इस समय कृत्रिम मेधा के माध्यम से भारत सबसे अग्रणी होने का प्रयास कर रहा है। इंटरनेट की शक्ति को 6जी से आगे ले जाने की कोशिश हो रही है और हर पुराने तरीके को कृत्रिम मेधा की सहायता से बदलने की पहल हो रही है। दावा किया जाता है कि वैश्विक स्तर पर विज्ञान और नवाचार के मामले में भारत तेजी से उभर रहा है। शोध कार्यों में भी देश किसी से पीछे नहीं है। पेटेंट की बात की जाए तो इसके लिए उद्यम और प्रौद्योगिकी में हम लगातार नए अन्वेषण कर रहे हैं। पेटेंट मामले में भारत दुनिया में छठे स्थान पर पहुंच गया है। विज्ञान और इंजीनियरिंग के मामले में दावा किया जाता है कि हम शीर्ष देशों की श्रेणी में शामिल हो गए हैं। मगर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार की राह अब भी कई तरह की चुनौतियों से घिरी हुई है।

वैश्विक नवाचार में जो मुकाबला होता है, उसमें भारत ने लगातार अपनी बढ़त बनाई है और वह 90वें पायदान से तीसवें स्थान पर पहुंच गया है। भारत के भावी प्रौद्योगिकी मिशनों में भी इसका विस्तार करने और सार्वजनिक क्षेत्र में कृत्रिम मेधा के विकास का लक्ष्य रखा गया है, लेकिन इसके लिए शिक्षा में जो परिवर्तन होना चाहिए, वह अभी तक नहीं हुआ है। शिक्षा परिसरों में जो नवाचार दिखाई देना चाहिए, वह भी नहीं दिखाई देता। निजी क्षेत्र ने विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थानों में भारी निवेश किया है। पंजाब को ही लें। इस राज्य में तीन मुख्य विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय और दूसरे विश्वविद्यालय जरूर खुल गए हैं, लेकिन उनमें विद्यार्थियों की कमी तो है ही, वहीं सटीक पाठ्यक्रमों का अभाव भी नजर आता है। यहां कहीं नवाचार नहीं दिखाई देता है।

केंद्र सरकार ने समग्र शिक्षा अभियान शुरू किया था। इसमें देश की विभिन्न शिक्षा प्रणालियों को एक साथ मिला कर सीधा रास्ता निकालने की कोशिश की गई थी। अब इस अभियान में भी नवाचार की घोषणा शिक्षा मंत्री ने की है। शिक्षा क्षेत्र में बड़े सपने देखने के साथ भारत अब अंतरिक्ष विज्ञान में भी नई बुलंदियों को छूना चाहता है। वह अमेरिका या रूस के मुकाबले किसी भी तरह पीछे नहीं रहना चाहता। हालांकि दूसरे क्षेत्रों में विकास की अब भी बहुत गुंजाइश है। वैसे मुद्दे की बात यह है कि शिक्षा के सभी पुराने ढर्रे अब बदले जाने चाहिए।

विज्ञान की समझ हर विद्यार्थी में हो, तभी शिक्षा में विकास के सपने पूरे हो सकेंगे। मगर इन सबके लिए पूंजी चाहिए। नीति आयोग यह कहता है कि कम से कम छह फीसद व्यय शिक्षा के विकास पर होना चाहिए, लेकिन आजादी के इतने वर्षों बाद और विकास की बुलंदियों को छू लेने के दावों के बावजूद देश ने कभी भी सकल घरेलू उत्पाद में से छह फीसद शिक्षा पर खर्च नहीं किया। हमेशा यह खर्च आंकड़ों में दिखाया जाता है, फीसद में नहीं, ताकि आबादी के लिहाज से तेजी से बढ़ते हुए देश में शिक्षा में बदलाव की धीमी गति को लेकर कोई उलझन पैदा न हो। हम शिक्षा के विकास में कृत्रिम मेधा के जरिए विश्व का नेतृत्व करना चाहते हैं। सरकार का कहना है कि कृत्रिम बुद्धिमता नैतिक, पारदर्शी और डेटा गोपनीयता सिद्धांतों पर आधारित हो। इसके अलावा यह समावेशी और मितव्ययी हो, लेकिन सच तो यह है कि मितव्यय के नाम पर धन का आबंटन अब भी कम है, लेकिन न तो यह समावेशी हो सका है और न ही वहनीय। सवाल यह है कि अगर

> उच्च शिक्षा में ज्यादातर विद्यार्थी कला और साहित्य क्षेत्र में शोध करना चाहते हैं। विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में शोध की रुचि कम ही नजर आती है। हम कृत्रिम मेधा से नवाचार की ओर बढ़ना चाहते हैं, लेकिन हमारा शोध इस क्षेत्र की बुलंदियों की ओर जाता नहीं दिख रहा। सवाल है कि कृत्रिम मेधा से नवाचार के लिए देश में कितने प्रशिक्षण संस्थान बनाए गए हैं। कितने शिक्षकों को हमने नई शिक्षा विधि में निपुण बनाया है? पुरानी नौकरियां अब खत्म हो रही हैं, क्योंकि दफ्तरों में सब काम कागज रहित होता जा रहा है। ऐसे में नवाचार को बढ़ावा देने के गंभीरता से प्रयास किए जाने की जरूरत है।

समावेशी, रोजगारपरक और अन्वेषणपूर्ण शिक्षा को गांव-गांव तक पहुंचाना है, तो इसके लिए उद्यम कहां है? अगर आज भी यह रपट आती है कि भारत में हजारों प्राथमिक विद्यालयों में एक-एक अध्यापक कई कक्षाओं को संभाल रहे हैं, तो शिक्षा में नई तकनीक और वैज्ञानिक दृष्टि को आत्मसात करने का लक्ष्य कब पूरा होगा? पंजाब को ही लें, आज भी यहां अधिकतर छात्र कला संकायों की ओर जा रहे हैं। जबकि नई शिक्षा नीति यह कहती है कि शुरू से लेकर उच्च स्तर तक नई पीढ़ी कला और साहित्य के साथ-साथ विज्ञान एवं तकनीक का भी अध्ययन करे।

दूसरी ओर आलम यह है कि स्कूलों में दाखिले का फीसद जरूर बढ़ गया है, लेकिन दसवीं तक आते-आते विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ रही है। इसकी वजह है-परिवारों की आर्थिक असुरक्षा और रोजगार की अनिश्चितता। वहीं देश की युवा पीढ़ी में काम करने की इच्छा लगातार घट रही है, तो इसका कारण उदारता से बांटी गई रेवड़ियां भी हैं। अजब विडंबना है कि एक ओर देश आर्थिक शक्ति बनता दिख रहा है और हम भविष्य में तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनने का दावा कर रहे हैं। आजादी के शतकीय महोत्सव 2047 तक हम महाशक्ति बनना चाहते हैं। दूसरी ओर युवा पीढ़ी को अनुकंपा के जरिए धीरज रखने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसे विरोधाभास नहीं तो और क्या कहा जा सकता है।

उच्च शिक्षा में ज्यादातर विद्यार्थी कला और साहित्य क्षेत्र में शोध करना चाहते हैं। विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में शोध की प्रवृत्ति नहीं बढ़ रही। हम कृत्रिम मेधा से नवाचार की ओर बढ़ना चाहते हैं, लेकिन हमारा शोध इस क्षेत्र की बुलंदियों की ओर जाता नहीं दिख रहा। हम कृत्रिम मेधा से नवाचार की बात जरूर करते हैं, लेकिन सवाल है कि कितने प्रशिक्षण संस्थान हमने इसके लिए बनाए हैं। कितने अध्यापकों को हमने नई शिक्षा विधि में निपुण बनाया है? नई शिक्षा नीति तो कहती है कि युवा पीढ़ी के प्रशिक्षण को किताबों के साथ-साथ यथार्थ से भी जोड़ा जाना चाहिए, मगर वास्तव में ऐसा हो नहीं पा रहा है। पुरानी नौकरियां अब खत्म हो रही हैं, क्योंकि दफ्तरों में सब काम कागज रहित होता जा रहा है। हालांकि अब भी अधिकतर संस्थानों में नौकरियों का वही पुराना ढर्रा है। दूसरी ओर चिकित्सा और इंजीनियरिंग की डिग्रियां अब युवा पीढ़ी के लिए अंतिम विकल्प नहीं रह गई हैं।

इसमें दोराय नहीं कि अब कृत्रिम मेधा में दक्ष पीढ़ी तैयार हो रही है। यही लक्ष्य भी होना चाहिए। मगर अभी तक इसमें नवाचार सतही स्तर पर ही दिखाई देता है। पाठ्यक्रमों में बदलाव नहीं दिख रहा और न ही इस दिशा में पुस्तकें लिखी जा रही हैं। अध्यापन विधि भी नहीं बदल रही। जबकि यथार्थ के धरातल पर नई पीढ़ी को खड़ा करना नई शिक्षा नीति का लक्ष्य होना चाहिए। फिलहाल इस बारे में दावे तो किए जाते हैं, लेकिन यह वास्तविक रूप से कहीं गतिमान नजर नहीं आता। अगर निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित कर समावेशी विकास के लिए दरवाजे खोलने हैं, तो समावेशी शिक्षण होना चाहिए। इस पर अभी बहुत काम करने की जरूरत है। कृत्रिम मेधा के उपयोग में आगे बढ़ने के दावे तो बहुत किए जाते हैं, लेकिन हमारी उत्पादन प्रक्रिया में इसके इस्तेमाल से लागत कम होती नजर नहीं आती। कृषि क्षेत्र में तो आज भी कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल न के बराबर है। समग्र शिक्षा अभियान में नवाचार का सपना सुंदर है, परंतु देश इस दिशा में तेजी से बढ़ता हुआ नजर नहीं आता। ऐसे में शिक्षा को नवाचार से जोड़ने के प्रयास करने होंगे।

टोकनाइजेशन

नई वित्तीय क्रांति की ओर बढ़ता भारत

टोकनाइजेशन आज तेजी से उभरता एक बड़ा वित्तीय बदलाव है, जिससे संपत्ति को डिजिटल टोकन में बदला जा रहा है। यह छोटे निवेश की सुविधा प्रदान करता है। इसी कारण भारत की वित्तीय दुनिया में इसे भविष्य की दिशा के रूप में देखा जा रहा है, परंतु अभी कुछ लोग इसके बारे में दुविधा में हैं और वे इसे केवल ब्लाकचेन की तकनीकी दुनिया तक सीमित मानते हैं। जबकि टोकनाइजेशन का अर्थ इससे कहीं बहुत अधिक है जिसमें बांड जैसे जमा प्रमाणपत्रों के साथ ही भूमि और भवन जैसी चीजें भी शामिल हैं

विक्रांत निर्मला सिंह
शोधार्थी, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान राउरकेला

प्रतीकात्मक

वित्तीय दुनिया में एक शांत क्रांति जन्म ले रही है, जो आने वाले वर्षों में अर्थव्यवस्था के काम करने के तरीके को बदल देगी। इस परिवर्तन का नाम है- टोकनाइजेशन। भारत में भी यह विचार अब केवल चर्चा तक सीमित नहीं रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक ने बीते साल जमा प्रमाणपत्रों (सर्टिफिकेट आफ डिपाजिट) के टोकनाइजेशन का पायलट शुरू किया है और उसे थोक डिजिटल रुपये से जोड़ना इस बात का संकेत है कि देश इस नई वित्तीय दिशा को संस्थागत रूप देने की ओर बढ़ रहा है। संभव है कि आने वाले बजट में वित्त मंत्री भी इस विषय पर भविष्य की स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करें, क्योंकि जो भारत आज डिजिटल वित्त के क्षेत्र में अग्रणी है, वह इस परिवर्तन से पीछे नहीं रहेगा। इसलिए इस बड़े वित्तीय परिवर्तन को समझना आवश्यक हो जाता है।

टोकनाइजेशन : सरल शब्दों में यदि इसे समझना चाहें तो टोकनाइजेशन वह प्रक्रिया है जिसमें जमीन, इमारत, जमा राशि या बांड जैसी किसी भी संपत्ति के अधिकारों को छोटे-छोटे डिजिटल टोकनों में बदल दिया जाता है और उन्हें ब्लाकचेन आधारित डिजिटल खाता-बही में दर्ज किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि बड़ी और महंगी संपत्तियों में भी आम लोग कम पूंजी लगाकर हिस्सा ले सकते हैं, लेनदेन तेजी से पूरे होते हैं और पूरी व्यवस्था अधिक पारदर्शी बनती है।

उदाहरण के तौर पर, यदि 100 करोड़ रुपये मूल्य की किसी इमारत को 10 लाख डिजिटल टोकनों में बांट दिया जाए, तो प्रत्येक टोकन की कीमत 10 हजार रुपये होगी। इस प्रकार केवल 10 हजार रुपये की न्यूनतम पूंजी से भी कोई निवेशक उस संपत्ति का एक छोटा हिस्सा खरीद सकता है। परिणामस्वरूप, जिन बाजारों में पहले बहुत अधिक पूंजी की आवश्यकता होती थी, वे अब आम निवेशकों के लिए भी उपलब्ध हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, यदि इस संपत्ति को किराये पर दिया जाए और उससे प्रति माह एक करोड़ रुपये का किराया प्राप्त हो, तो यह पूरी राशि सभी टोकन धारकों में उनके पास मौजूद टोकनों की संख्या के अनुपात में स्वतः बांट दी जाती है। यह वितरण किसी व्यक्ति या संस्था के हस्तक्षेप से नहीं, बल्कि एक विशेष डिजिटल तकनीक के माध्यम से स्वतः संचालित होता है, जिससे भुगतान समय पर, पारदर्शी और भरोसेमंद बनता है।

कैसे काम करता है यह सिस्टम : यहां पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि आखिर टोकनाइजेशन काम कैसे करता है? इसके दो मुख्य आधार हैं : ब्लाकचेन (डिस्ट्रिब्यूटेड लेजर) और स्मार्ट कांट्रैक्ट। ब्लाकचेन एक विकेंद्रीकृत डिजिटल खाता-बही है, जिसमें लेनदेन का रिकार्ड सुरक्षित और अपरिवर्तनीय रूप में दर्ज होता है। इसकी उच्च सुरक्षा और वैश्विक पहुंच के कारण किसी भी संपत्ति को डिजिटल टोकन में बदलना संभव हो पाता है। वहीं स्मार्ट कांट्रैक्ट ऐसे डिजिटल कोड होते हैं, जो संपत्ति के स्वामित्व और उससे जुड़े आर्थिक लेनदेन को अपने आप नियंत्रित करते हैं। इन तकनीकों के संयुक्त उपयोग से लेनदेन की लागत घटती है और बिचौलियों पर निर्भरता कम होती है।

आर्थिकी में कैसे आएगा बदलाव : टोकनाइजेशन अर्थव्यवस्था में एक ऐसे परिवर्तन का संकेत देता है, जहां पूंजी जुटाने, निवेश करने और संपत्ति रखने के पारंपरिक तरीके बदल सकते हैं। किसी उद्यमी या परियोजना कंपनी के लिए यह अनिवार्य नहीं रहेगा कि वह केवल शेयर बाजार में सूचीबद्ध होकर या आइपीओ लाकर ही पूंजी जुटाए। टोकनाइजेशन के माध्यम से वह अपनी संपत्ति-आधारित परियोजनाओं को डिजिटल टोकनों में बदलकर सीधे लोगों को भागीदार बना सकता है। इस बदलाव का दूसरा बड़ा प्रभाव यह होगा कि अर्थव्यवस्था में पड़ी निष्क्रिय संपत्तियां जैसे जमीन, इमारतें या अन्य अचल परिसंपत्तियां भी आर्थिक रूप से सक्रिय हो सकेंगी। जो संपत्तियां अब तक केवल कागजों में मूल्यवान थीं, वे निवेश और ऋण का आधार बनकर उत्पादन और रोजगार को बढ़ावा देंगी।

टोकनाइजेशन उस बहस को भी चुनौती देता है, जिसमें पूंजी के अत्यधिक केंद्रीकरण की बात कही जाती रही है। जब बड़ी-बड़ी संपत्तियां छोटे डिजिटल हिस्सों में बांटी जाएंगी, तो उनका लाभ केवल कुछ चुनिंदा लोगों तक सीमित नहीं रहेगा। आम नागरिक भी कम पूंजी लगाकर उन संपत्तियों में हिस्सेदारी ले सकेगा। इससे संपत्ति तक पहुंच का दायरा बढ़ेगा और आर्थिक लोकतंत्रीकरण को बल मिलेगा।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य : वैश्विक स्तर पर टोकनाइजेशन एक बड़े वित्तीय परिवर्तन के रूप में उभर रहा है। फार्च्यून बिजनेस इनसाइट्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में वैश्विक टोकनाइजेशन बाजार का आकार लगभग 32,800 करोड़ रुपये था। इसके 2026 में बढ़कर लगभग 39 हजार करोड़ रुपये और 2034 तक करीब 1.32 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है। इस दौरान इसकी औसत वार्षिक वृद्धि दर लगभग 16.4 प्रतिशत रहने की संभावना है। वर्ष 2025 में उत्तर अमेरिका इस क्षेत्र में अग्रणी रहा, जबकि एशिया-प्रशांत क्षेत्र को सबसे तेजी से बढ़ने वाला बाजार माना जा रहा है। वहीं भारत का टोकनाइजेशन बाजार 2026 में लगभग 1,740 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। भले ही वैश्विक स्तर पर भारत का आकार अभी अपेक्षाकृत छोटा हो, लेकिन वह इस बड़े वित्तीय परिवर्तन का उभरता हुआ हिस्सा बन चुका है। इसकी गति इस बात पर निर्भर करेगी कि भारत टोकनाइजेशन को लेकर किस प्रकार का कानूनी ढांचा तैयार करता है।

भारतीय परिदृश्य : भारत भी टोकनाइजेशन के इस वैश्विक रुझान में अब तेजी से शामिल होता दिख रहा है। यह विषय केवल तकनीकी या निजी प्रयोगों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि नीतिगत स्तर पर भी इस पर गंभीर विमर्श शुरू हो चुका है। वर्ष 2025 में सांसद राघव चड्ढा द्वारा प्रस्तावित टोकनाइजेशन विधेयक इसी दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। इस विधेयक का उद्देश्य परिसंपत्तियों को ब्लाकचेन आधारित टोकनों में बदलने के लिए एक स्पष्ट और पारदर्शी नियमावली ढांचा तैयार करना था।

इस विमर्श की वैचारिक गहराई को इन्फोसिस के सह-संस्थापक और भारत में 'आधार' जैसी क्रांति के जनक नंदन नीलेकणी के बातों में भी समझा जा सकता है। उनके अनुसार, यदि भारत को छह प्रतिशत से आगे बढ़कर आठ प्रतिशत की सतत आर्थिक वृद्धि दर हासिल करनी है, तो देश में मौजूद 'निष्क्रिय पूंजी' को सक्रिय करना होगा। क्योंकि भारत में लगभग आधी संपत्ति भूमि के रूप में है, लेकिन इसका बड़ा हिस्सा न तो आसानी से बेचा जा सकता है और न ही औपचारिक ऋण के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। इसके माध्यम से ऐसे भू-खंड भी निवेश योग्य बन सकते हैं। रैयत अपनी भूमि को टोकन में बदल बैंक को दे पाएंगे और औपचारिक वित्तीय तंत्र से ऋण प्राप्त कर सकेंगे।

लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका भारतीय रिजर्व बैंक की होगी। टोकनाइजेशन को लेकर नियम क्या होंगे, क्या जायज है और क्या नहीं, यह साफ करना जरूरी है, ताकि लोगों का भरोसा बना रहे। किसी भी संपत्ति को डिजिटल टोकन में बदलते समय यह सुनिश्चित होना चाहिए कि उसका रिकार्ड सही हो और वह कानूनी रूप से मान्य भी हो। अच्छी बात यह है कि टोकनाइजेशन से जुड़े जोखिम ऐसे नहीं हैं जिन्हें संभाला न जा सके। सही नियम, मजबूत निगरानी और पारदर्शी व्यवस्था के जरिये इन्हें काबू में रखा जा सकता है। इसलिए भारत को इस दिशा में बिना हड़बड़ी, लेकिन एक स्पष्ट नीति और मजबूत नियमों के साथ आगे बढ़ना होगा।

मजबूत ढांचा होने पर भारत के लिए बेहतर अवसर

यदि टोकनाइजेशन को भारत में एक वास्तविक आर्थिक परिवर्तन में बदलना है, तो इसे किसी एक नीति या तकनीक तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इसके लिए भारत को कानूनी स्पष्टता, मजबूत डिजिटल अवसंरचना और संतुलित नियामकीय दृष्टिकोण, तीनों मोर्चों पर एक साथ आगे बढ़ना होगा। सबसे पहले आवश्यकता है एक स्पष्ट कानूनी ढांचे की, जो यह तय करे कि टोकनाइज्ड संपत्ति का दर्जा क्या होगा? क्या वह प्रतिभूति (सिक्योरिटीज) है, या संपत्ति अधिकार है या एक नई परिसंपत्ति श्रेणी? जब तक स्वामित्व, उत्तराधिकार, कर नियम और विवाद समाधान के नियम स्पष्ट नहीं होंगे, तब तक टोकनाइजेशन बड़े पैमाने पर भरोसा नहीं जीत पाएगा।

भूमि और रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों में यह चुनौती और गहरी है, क्योंकि भूमि राज्य सूची का विषय है, ऐसे में केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय निर्णायक भूमिका निभाएगा। दूसरा स्तंभ है डिजिटल और संस्थागत अवसंरचना। भारत की ताकत यह है कि उसके पास आधार, यूपीआइ और डिजिटलीकृत भूमि रिकार्ड के रूप में डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर पहले से विद्यमान है। अब आवश्यकता है इन्हें आपस में जोड़ने की, ताकि सुरक्षित, मानकीकृत और भरोसेमंद तरीके से टोकनाइजेशन केवल तकनीकी प्रयोग न रहे, बल्कि बड़े पैमाने पर लागू किया जा सके।

तीसरा और शायद सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है नियामकीय संतुलन। भारतीय रिजर्व बैंक और अन्य नियामकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि नवाचार एवं जोखिम के बीच संतुलन बना रहे। न तो अत्यधिक ढील अर्थव्यवस्था को अस्थिर करे और न ही अत्यधिक कठोरता इस उभरते अवसर को नुकसान करें। इसके लिए सरकार और नियामकों को पहले छोटे-छोटे प्रयोग करने होंगे, ताकि देखा जा सके कि यह व्यवस्था जमीन पर कैसे काम करती है। यह भी जरूरी होगा कि पहचान और लेनदेन से जुड़े नियम कड़े एवं साफ हों, ताकि धोखाधड़ी या गलत इस्तेमाल न हो सके। अगर भारत नीतिगत स्पष्टता के साथ इस रास्ते पर आगे बढ़ता है, तो टोकनाइजेशन न निवेश के नए अवसर खोलने के साथ ही देश की आर्थिक प्रगति को भी नई गति देगा।

(विक्रांत निर्मला सिंह)

विनिवेश और संपदा मौद्रीकरण पर करना होगा फोकस

बजट 2026-27 बिगुल

राजीव कुमार • जागरण

- **आयकर में राहत और जीएसटी सुधारों से टैक्स संग्रह की वृद्धि दर में आई कमी, अब राजस्व के मोर्चे पर चुनौती**
- **बजट में पांच से सात लाख रुपये कमाने वाले निम्न मध्यम आय वर्ग के लिए की जा रही राहत की आस**
- **इस वर्ग को निश्चित किस्त पर मकान की सुविधा जैसी सहूलियत देने से बढ़ेगी खपत, इकोनमी को होगा लाभ**

नई दिल्ली : यूं तो पिछले साल ही केंद्र सरकार ने बजट में 12 लाख रुपये तक की आय को कर मुक्त करने की घोषणा कर दी थी और उसके बाद जीएसटी सुधारों ने जनता पर पड़ने वाली महंगाई की मार को भी कम कर दिया है। इसका असर सरकार के राजस्व पर साफ तौर पर दिखाई दे रहा है। हालांकि, अभी भी पांच से सात लाख रुपये कमाने वाले निम्न मध्यम आय वर्ग के लिए बजट में राहत की आस लगाई जा रही है, जिससे उनकी उत्पादकता बढ़ सके जो अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमंद हो। यानी ऐसी राहत जिससे वह किफायती मकान खरीद सकें और जीवनस्तर पर बदलाव ला सकें।

जानकर मानते हैं कि शहर में रहने वाले ये निम्न मध्यम वर्ग सबसे अधिक आकांक्षी है और इन्हें मकान खरीदारी में ब्याज दरों पर अतिरिक्त छूट या सरकार की तरफ से एक निश्चित किस्त पर मकान की सुविधा, इलाज के लिए सब्सडी वाले हेल्थ इंश्योरेंस और रेल, बस व मेट्रो में सवारी के लिए कम दर पर सालाना एकमुश्त भुगतान की सुविधा मुहैया कराई जाए तो अर्थव्यवस्था को समर्थन मिलेगा। पर इसके साथ ही राजस्व बढ़ोत्तरी के लिए विनिवेश और मौद्रीकरण पर ध्यान देना होगा। डेलाइट के पार्टनर (अप्रत्यक्ष कर) एमएस मणि कहते हैं, 'बजट का फोकस उपभोग बढ़ाने पर होना चाहिए ताकि आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने में मदद मिले और उससे टैक्स का संग्रह बढ़ सके।'

राजस्व बढ़ाने की चुनौती : चालू वित्त वर्ष 2025-26 में सरकार ने इनकम टैक्स के साथ जीएसटी की दरों में भी कटौती कर राहत देने का काम तो किया, लेकिन इससे चालू वित्त वर्ष में टैक्स से मिलने वाले राजस्व की बढ़ोतरी दर प्रभावित हो गई। वित्त वर्ष 2024-25 में यह बढ़ोतरी दर सात प्रतिशत से अधिक थी जो चालू वित्त वर्ष में चार प्रतिशत के पास है। भारत में टैक्स संग्रह जीडीपी का लगभग सात प्रतिशत है जबकि चीन में यह प्रतिशत 20 तो वियतनाम में 16 प्रतिशत है। तभी बैंक आफ बड़ौदा के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सबनवीस और एचडीएफसी बैंक की प्रमुख अर्थशास्त्री साक्षी गुप्ता दोनों इस बात से इत्तेफाक रखते हैं कि वैश्विक उथल-पुथल और अमेरिकी टैक्स की वजह से कारपोरेट के मार्जिन पर दबाव है। इनकम टैक्स छूट की सीमा 12 लाख करने से लगभग एक करोड़ टैक्सपेयर्स इस दायरे से बाहर चले गए। जानकारों का कहना है कि जीएसटी कम करने से बढ़ने वाली खपत से टैक्स संग्रह तो बढ़ेगा, लेकिन इसमें छह माह का समय लगेगा।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

20 एकड़ से अधिक कृषि भूमि रखने वालों को कर दायरे में लाएं: नंदा

ऐसे में सवाल उठता है कि सरकार अपने राजस्व को कैसे बढ़ाएगी। पेट्रोल-डीजल को जीएसटी में शामिल किया नहीं जा सकता है। राजनीति इतनी तीखी चल रही है कि कोई भी सरकार या दल कृषि से होने वाली आय को टैक्स के दायरे में नहीं लाएगी। हालांकि इंस्टीट्यूट आफ चार्टर्ड एकाउंटेंट आफ इंडिया (आइसीएआइ) के प्रेसिडेंट चरनजोत सिंह नंदा कहते हैं, '20 एकड़ से अधिक जमीन पर खेती करने वालों को टैक्स के दायरे में लाना चाहिए, हमने सरकार से यह सिफारिश की है।' हालांकि राजनीतिक परिस्थितियों पर नजर डालें तो ऐसा संभव होता नहीं दिखता है।

मोनेटाइजेशन बन सकता है राजस्व जुटाने का प्रमुख जरिया

टैक्स बढ़ाने के लिए विनिवेश और संपदा के मौद्रीकरण (मोनेटाइजेशन) का रास्ता मुख्य रूप से दिखता है। हालांकि पिछले तीन साल से इस दिशा में सरकार को कुछ खास सफलता हाथ नहीं लगी है। वहीं, सब्सिडी के मद में सालाना 4.5 लाख करोड़ के खर्च की भी समीक्षा की जा सकती है। मदन सबनवीस कहते हैं, 'विभिन्न देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते के तहत सरकार को इस साल आयात शुल्क में कटौती करनी होगी, इसलिए टैक्स के फ्रंट पर तो बजट में राहत मुश्किल है, खाद के मद की 1.7 लाख करोड़ की सब्सिडी में राहत देखने को मिल सकती है। मुफ्त के राशन की स्कीम में भी कोई बदलाव नहीं होगा। विनिवेश की जगह सरकार का मुख्य फोकस संपदा के मौद्रीकरण पर रहेगा।'

50 लाख की आय से सरकार का सरचार्ज शुरू हो जाता है। इस सीमा को बढ़ाकर 75 लाख किया जाना चाहिए। अभी 50 लाख से एक करोड़ की आय पर 10 प्रतिशत का सरचार्ज लगता है। टीडीएस नहीं देने और इनकम टैक्स नोटिस का जवाब नहीं देने पर उसे अपराध नहीं माना नहीं जाना चाहिए।

चरनजोत सिंह नंदा, प्रेसिडेंट, आइसीएआइ

वित्तीय मजबूती के लिए बजट में सरकार का फोकस निश्चित रूप से विनिवेश और संपदा के मौद्रीकरण पर होगा। अगले वित्त वर्ष में नामिनल जीडीपी की विकास दर अधिक होने से टैक्स संग्रह बढ़ाने में मदद मिलेगी।

साक्षी गुप्ता, मुख्य अर्थशास्त्री, एचडीएफसी बैंक

मुख्यधारा के विकास से जुड़तीं महिलाएं

माइक्रोफाइनेंस ने महिलाओं की भूमिका बढ़ाने के साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य और बचत को भी बढ़ावा दिया है

डा. आलोक मिश्रा

संप्रति महिलाओं के माध्यम से एक प्रभावी आर्थिक क्रांति आकार ले रही है। लाखों महिलाएं सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, पशुपालन, स्थानीय व्यापार और हस्तशिल्प जैसे छोटे, अनौपचारिक उद्यमों से अपनी आजीविका चला रही हैं। यह उनका पहला स्थायी और स्वतंत्र आय का स्रोत बनता है। इस परिवर्तन में माइक्रोफाइनेंस ने एक निर्णायक भूमिका निभाई है। बिना गारंटी वाले ये छोटे कर्ज, जो घर की दहलीज पर ही आसान किस्तों पर उपलब्ध हैं, महिलाओं की आजीविका और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने, परिवार की आय को सुदृढ़ करने और अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी करने में सक्षम बनाते हैं। इन महिलाओं के लिए माइक्रोफाइनेंस केवल वित्तीय सहायता नहीं, बल्कि सम्मानजनक आजीविका का माध्यम और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने वाली एक जीवनरेखा बनकर उभरा है।

एक ऐसे दौर में जब तमाम प्रयासों के बीच ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत में पारंपरिक बैंकों की पहुंच अब भी कुछ अपेक्षाकृत रूप से सीमित है, तब इस स्थिति में माइक्रोफाइनेंस एक वरदान बनकर उभरा है। आज माइक्रोफाइनेंस भारत के दूर-दराज वाले इलाकों तक गहराई से अपनी पैठ बना चुका है। यह देश के 720 जिलों में लगभग 7.5 करोड़ ऐसे लोगों को अपनी वित्तीय सेवाओं का लाभ दे रहा है, जिस तबके के लोगों की आय कम है। इनमें देश के 112 आकांक्षी जिले भी शामिल हैं। इन लाभार्थियों में लगभग 100 प्रतिशत महिलाएं हैं, जिनके लिए माइक्रोफाइनेंस औपचारिक ऋण प्रणाली से जुड़ाव की पहली कड़ी बन गई है। इसने आर्थिक पिरामिड के सबसे निचले स्तर तक औपचारिक वित्त को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस दृष्टि से यह कहना उचित होगा कि माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेशन का सशक्त स्तंभ बनकर उभरा है।

माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से ऋण प्राप्त करने वाले अधिकांश लोग पहली पीढ़ी के उद्यमी होते हैं, जिनके व्यवसाय समय के साथ धीरे-धीरे विकसित होते हैं। प्रारंभिक ऋण जोकि 30,000 से 50,000 के बीच होता है, उसका उपयोग बुनियादी उपकरण खरीदने में किया जाता है। अगले चरण के ऋण चक्र आय के स्रोतों में विविधता और उत्पादन विस्तार को संभव बनाते हैं। तयशुदा किस्तें वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देती हैं और नियमित आय परिवारों को अस्थायी मजदूरी की अनिश्चितता से बाहर निकालने में सहायक होती है। यह परिवर्तन केवल अनुभवजन्य नहीं, बल्कि संरचनात्मक भी है। वर्ष 2021 में एनसीएईआर के एक अध्ययन के अनुसार माइक्रोफाइनेंस का भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान कुल सकल मूल्य वर्धन का लगभग 2.03 प्रतिशत है और यह लगभग 1.30 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान करने में सहायक बना है। इससे स्पष्ट है कि माइक्रोफाइनेंस आज वर्तमान भारत की आर्थिक संरचना का एक महत्वपूर्ण घटक बन चुका है। माइक्रोफाइनेंस परिदृश्य पर आरबीआइ द्वारा विनियमित संस्थाएं सख्त दिशानिर्देशों, फेयर प्रैक्टिसेज कोड और उद्योग की आचार संहिता के तहत जिम्मेदार ऋण प्रथाओं का पालन करती हैं, जिससे महिला उधारकर्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित होती है। आरबीआइ के अनुसार किसी उधारकर्ता की कुल माइक्रोफाइनेंस ऋण चुकौती उसकी घरेलू आय के 50 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती। इसके साथ ही आरबीआइ द्वारा मान्यता प्राप्त स्व-नियामक संगठन माइक्रोफाइनेंस इंडस्ट्री नेटवर्क यानी एमएफआइएन द्वारा निर्धारित प्रविधान भी लागू होते हैं। इसमें उधार की सीमा को निर्धारित कर ऋण जोखिम को कम किया जाता है। इसके साथ ही त्रिस्तरीय शिकायत निवारण प्रणाली भी मौजूद है, जिसमें एमएफआइएन दूसरे स्तर की व्यवस्था को चौबीसों घंटे संचालित करता है। ये सभी सुरक्षा प्रविधान जवाबदेही सुनिश्चित करते हैं। उधारकर्ताओं की रक्षा करते हैं और समग्र सेक्टर की दीर्घकालिक स्थिरता को मजबूती प्रदान करते हैं। इसके बावजूद अपने प्रमाणित प्रभाव के बावजूद माइक्रोफाइनेंस सेक्टर इस समय गंभीर नकदी संकट से जूझ रहा है। इसके कारण करीब 50 लाख जरूरतमंद औपचारिक ऋण व्यवस्था से बाहर हो गए हैं। इससे उनके फिर से साहूकारों और बिना नियमन वाली अनौपचारिक ऋण व्यवस्थाओं के शिकंजे में फंसने का जोखिम बढ़ गया है। ऐसे में, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को महंगे कर्ज के दुष्चक्र में फंसने से बचाने के लिए संगठित और विनियमित माइक्रोफाइनेंस में औपचारिक वित्त का प्रवाह बनाए रखना आवश्यक हो गया है।

रोजगार सृजन से आत्मनिर्भरता की ओर कदम। फाइल

प्रभाव के स्तर पर भी देखा जाए तो आय अर्जन से इतर माइक्रोफाइनेंस का सामाजिक प्रभाव गहरा और स्थायी है। यह महिलाओं की घरेलू निर्णय भूमिका को सशक्त करता है, शिक्षा-स्वास्थ्य में निवेश बढ़ाता है और बचत की आदत को प्रोत्साहित करता है। जैसे-जैसे महिलाएं वित्तीय योगदानकर्ता और रोजगार सृजनकर्ता बनती हैं, वे परिवार और समुदाय दोनों में सामाजिक सम्मान और आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल करती हैं। महिला-केंद्रित विकास की दिशा में बढ़ते भारत के लिए, निरंतर पूंजी प्रवाह और सशक्त नियामक निगरानी के साथ माइक्रोफाइनेंस एक बुनियादी स्तंभ बना रहेगा, जो आजीविका के माध्यमों को मजबूत कर भारत की विकास गाथा में योगदान देने में सक्षम बन रहा है।

(लेखक माइक्रोफाइनेंस इंडस्ट्री नेटवर्क-एमएफआइएन के सीईओ एवं निदेशक हैं)

response@jagran.com

विवाद बढ़ाने का काम करता चीन

विजय क्रांति

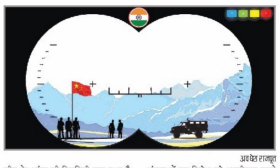

शक्सगाम घाटी को लेकर चीन का रवैया एक ऐसी चेतावनी है, जिस पर भारत को पूरी तरह चौकस रहने की आवश्यकता है

जब अमेरिका भारत के समक्ष समस्याएं खड़ी करने से बाज नहीं आ रहा है, तब चीन भी चिंता का कारण बन रहा है। वास्तव में चीन ने जबसे 1951 में तिब्बत पर जबरन कब्जा करके भारत-तिब्बत सीमा को भारत-चीन सीमा में बदल दिया, तबसे उसके भारत-विरोधी रुख में लगातार वृद्धि होती चली जा रही है। पहले तो उसने 1962 में तिब्बत को छावनी की तरह इस्तेमाल करके भारत पर हमला किया। इसके बाद से वह सैकड़ों किमी लंबी इस सीमा पर उकसावे की कोई न कोई हरकत करता आ रहा है। आर्थिक और सैनिक शक्ति हासिल करने के बाद तो चीन की यह आक्रामकता सीधी दादागीरी में बदल चुकी है। पहले वह भारत के अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख के इलाकों पर जुबानी दावे करता था, लेकिन 2017 में डोकलाम घाटी पर कब्जे की कोशिश में मुंह की खाने के बाद उसने पूरी सीमा पर बड़े पैमाने पर सैन्य निर्माण शुरू करके भारत के लिए नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। पिछले दिनों अंतरिक्ष से सीमाओं की टोह लेने वाले भारतीय उपग्रहों से पता चला कि लद्दाख में चीनी कब्जे वाले शक्सगाम इलाके में चीनी सेना एक ऐसी सड़क बना रही है, जो भारत-पाकिस्तान और चीन के इस मिलन क्षेत्र में सियाचिन की सुरक्षा के लिए नए खतरे पैदा कर सकती है।

शक्सगाम घाटी जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के भारत में विलय के बाद भारत का हिस्सा थी, लेकिन अक्टूबर 1947 में उस पर हमले में पाकिस्तानी सेना ने कब्जा कर लिया था। 1962 के भारत-चीन युद्ध के एक साल बाद ही पाकिस्तान ने चीन को खुश करने के लिए 1963 की एक संधि के तहत शक्सगाम का लगभग 5,180 वर्ग किमी क्षेत्र चीन को सौंप दिया। रणनीतिक दृष्टि से शक्सगाम के भौगोलिक महत्व को इससे समझा जा सकता है कि यह पाकिस्तान द्वारा भारत से छीने गए गिलगित-बाल्टिस्तान और चीन द्वारा 1949 में कब्जाए गए ईस्ट-तुर्किस्तान (चीन द्वारा दिया गया नया नाम 'शिनजियांग') को आपस में जोड़ता है। इसके अलावा यह सियाचिन के बहुत निकट है जो शक्सगाम और भारत के उस अक्साई चिन को अलग करता है, जिस पर 1950 के दशक में चीन ने गुपचुप कब्जा कर लिया था। शक्सगाम में चीन की यह सड़क बन जाने के बाद दुनिया के सबसे ठंडे युद्धक्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर को पाकिस्तानी हमलों से बचाने में जुटी भारतीय सेनाओं के लिए खतरा दोगुना हो जाएगा। आज सियाचिन पर उपस्थिति के कारण भारतीय सेना चीन के सैनिक महत्व वाले कराकोरम हाईवे पर नजर रख सकती है, जिस वजह से सियाचिन चीन के आंख की किरकिरी बना हुआ है।

अवधेश राजपूत

दुनिया के सबसे कठिन इलाकों में गिने जाने वाले इस क्षेत्र में सड़कों के सैनिक महत्व को इससे समझा जा सकता है कि गलवन कांड के तुरंत बाद भारतीय सेना ने जिस गति और संख्या के साथ चीनी सैनिकों पर जवाबी हमला करके चीन को झकझोर दिया, वह केवल इसलिए संभव हो पाया कि उससे पहले ही भारतीय सेनाओं को लेह और श्योक से गलवन होते हुए दौलतबेग ओल्डी तक पक्की सड़क मिल चुकी थी। मोदी सरकार को इसका श्रेय जाता है कि उसने भारत-तिब्बत सीमा पर लगने वाली लगभग हर चौकी को 70 से ज्यादा नई और बारहमासी सड़कों से जोड़ दिया है। जैसी उम्मीद थी, सैटेलाइट चित्रों के बाद भारत सरकार ने चीन के समक्ष विरोध दर्ज किया है। न केवल विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता, बल्कि थलसेना अध्यक्ष ने भी चीन को याद दिलाया है कि शक्सगाम घाटी एक भारतीय क्षेत्र है और उसे चीन को सौंपने वाला 1963 का पाकिस्तान-चीन समझौता गैरकानूनी और अस्वीकार्य है। चीन ने अपने परंपरागत अक्खड़ अंदाज में इस विरोध को अस्वीकार करते हुए इसे दो सार्वभौम देशों के बीच हुआ समझौता बताने का प्रयास किया, लेकिन यह कहते हुए चीनी प्रवक्ता ने इस तथ्य को छिपा लिया कि उस समझौते में साफ-साफ लिखा है कि शक्सगाम भारत और पाकिस्तान के बीच एक विवादित इलाका है और भविष्य में इस विवाद के सुलझने पर इस इलाके के अधिकार वाली सरकार से नया समझौता किया जाएगा।

शक्सगाम घाटी को लेकर विवाद के बीच सवाल यह है कि चीन ने नई सड़क बनाकर भारत के साथ नया विवाद शुरू करने का फैसला करने के लिए यही समय क्यों चुना? इसे समझने के लिए चीनी रणनीति और इतिहास पर एक नजर डालना काफी होगा। 1912 में स्वतंत्र चीनी गणराज्य की स्थापना के बाद चीन ने तिब्बत, दक्षिणी मंगोलिया और मंचूरिया पर कब्जा करके जिन 14 देशों के साथ सीमाएं साझा की हैं, उनमें से 12 में से अधिकांश के साथ उसने सीमा समझौते ऐसे मौकों पर किए, जब वे किसी न किसी कारण से कमजोर थे और चीन के दबाव में थे, लेकिन भारत और भूटान के साथ उसने सीमा समझौते इस कारण टाले हुए हैं कि धीरे-धीरे लक्षित इलाकों में उनकी जमीन हड़पने के बाद ही और 'उचित' अवसर आने पर ही वह ये समझौते करेगा।

चीन ने एशिया में हर बड़ी सैन्य कार्रवाई के लिए ऐसे समय का चुनाव किया, जब बड़ी शक्तियां किसी बड़े विवाद में उलझी हुई थीं। उदाहरण के लिए तिब्बत पर कब्जा जमाने के लिए उसने मुख्य सैनिक हमला तब किया जब उसने सोवियत संघ के साथ मिलकर उत्तरी कोरिया और दक्षिणी कोरिया के बीच युद्ध शुरू करके अमेरिका को उस झगड़े में उलझा दिया। इसके बाद 1962 में उसने अक्टूबर में भारत पर तब हमला किया, जब क्यूबा में सोवियत संघ और अमेरिका के बीच परमाणु हथियारों की तैनाती को लेकर पूरी दुनिया का ध्यान इस तनाव पर टिका हुआ था। आज भारत के एकमात्र भरोसेमंद दोस्त रूस ने खुद को यूक्रेन के साथ अपने अंतहीन युद्ध में उलझा लिया है और इस कारण काफी कमजोर हो चुका है। चीन-विरोध के नाम पर भारत की मदद का फैसला कर सकने वाला अमेरिका भी इस समय दुनिया भर के साथ आर्थिक टकराव में बुरी तरह उलझा हुआ है। ऐसे में भारत के लिए चीन की ओर से किसी अनुचित कार्रवाई का खतरा पहले से अधिक है। शक्सगाम में चीन का नया कदम एक ऐसी चेतावनी है, जिस पर भारत को पूरी तरह चौकस रहने की आवश्यकता है। उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं सेंटर फार हिमालयन एशिया स्टडीज एंड एंगेजमेंट के चेयरमैन हैं)

response@jagran.com

इस्लामी नाटो को काउंटर करेगा भारत का यह रणनीतिक दांव

डोनाल्ड ट्रंप की अगुआई में अमेरिका अपने मसलों में व्यस्त है। ट्रंप का पूरा ध्यान 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' पर है। अमेरिका पर कम होते भरोसे के बीच सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये का इस्लामी नाटो आकार ले रहा है। जाहिर है कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक हित दांव पर हैं। ऐसे में भारत भी संयुक्त अरब अमीरात, इजरायल और ग्रीस के साथ मिल कर इस्लामी नाटो के प्रभाव का मुकाबला करने की रणनीति पर काम कर रहा है। आइये जानते हैं इस्लामी नाटो और भारत के रणनीतिक दांव के बारे में।

क्या है इस्लामी नाटो

सितंबर, 2025 में पाकिस्तान और सऊदी अरब ने एक सैन्य समझौते को अंतिम रूप दिया है। इसमें कहा गया है कि एक देश पर बाहरी हमला दूसरे देशों पर हमला माना जाएगा। यह समझौता क्षेत्रीय अस्थिरता को लेकर सऊदी अरब की चिंता और पाकिस्तान की कमजोर आर्थिक स्थिति का नतीजा है। कतर पर इजरायल के हमले ने भी सऊदी अरब को इस तरह के समझोते के लिए प्रेरित किया। इस समझौते से सऊदी अरब को एक परमाणु हथियार से संपन्न देश का साथ मिला वहीं पाकिस्तान को संसाधनों से समृद्ध सऊदी अरब से मदद की उम्मीद मिली। भारत पाकिस्तान के संघर्ष में हो सकता है सऊदी अरब सीधे सैन्य हस्तक्षेप न करे लेकिन वह पाकिस्तान की आर्थिक मदद तो कर ही सकता है।

तुर्किये बनेगा इस्लामी नाटो का हिस्सा

अब तुर्किये भी सऊदी अरब व पाकिस्तान के बीच हुए सैन्य समझौते में शामिल होना चाहता है। इस सैन्य गठबंधन से तुर्किये की खाड़ी क्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा और इस्लामी दुनिया में भी उसका दबदबा बढ़ेगा। तर्किये लंबे समय से इस्लामी देशों का नेतृत्व करने की चाहत रखता है। इस समझौते से तुर्किये को अपने रक्षा उत्पादों के लिए खाड़ी देशों में बाजार भी मिल सकेगा। वहीं तुर्किये की उन्नत रक्षा तकनीक का फायदा सऊदी अरब और पाकिस्तान को भी मिलेगा।

इस्लामी नाटों का काउंटर

अगर सऊदी-पाकिस्तान-तुर्किये गठबंधन एक तरफ है, तो यूएई और इजरायल के साथ भारत के बढ़ते रक्षा और रणनीतिक संबंध दूसरी तरफ हैं। 19 जनवरी को, यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों ने रणनीतिक रक्षा साझेदारी के लिए आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए। हालांकि इसकी भाषा सामान्य थी, लेकिन इसका समय मात्र संयोग नहीं लगता। यह सऊदी-पाक गठबंधन के बारे में बढ़ती चर्चा और इस क्षेत्र में अमेरिकी प्रतिबद्धताओं के बारे में बढ़ती अनिश्चितता के बीच हुआ। विशेषज्ञों का कहना है कि भारत, यूएई और इजरायल के साथ एक नया भू-राजनीतिक गठबंधन बना रहा है ताकि पाकिस्तान और चीन के साथ उभरते तुर्किये-सऊदी अरब गठबंधन का मुकाबला किया जा सके। ये नए गठबंधन अमेरिकी और यूरोपीय शक्ति के सिकुड़ने का सीधा नतीजा हैं। यह रणनीतिक दांव अरब खाड़ी से भूमध्य सागर की ओर बढ़ रहा है। वहां, ग्रीस, साइप्रस और इजरायल एक आक्रामक तुर्किये के खिलाफ रणनीतिक गठबंधन को मजबूत बना रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार इजरायल ने भारत को 3+1 भूमध्यसागरीय समूह के 10वें त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया, जिसे पूर्वी भूमध्य सागर में तुर्किये की आक्रामकता का मुकाबला करने के लिए बनाया गया है। ग्रीस और साइप्रस के लिए भारत का समूह में आना तुर्किये की महत्वाकांक्षाओं के खिलाफ उनकी ताकत बढ़ाती है। भारत के लिए यह पश्चिमी समुद्री सीमा खोलता है, जो उसकी ऊर्जा सुरक्षा और व्यापार के लिए जरूरी है।

जागरण रिसर्च